# बाल-संस्कृत-मञ्जूषा

## (संस्कृत भाषा -किट)

(प्रयोग एवं निर्माण विधि आधारित)

## प्रशिक्षण- निर्देशिका

## 2023-24

## राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 , लखनऊ)

संस्कृत भाषा-किट आधारित निर्माण एवं प्रयोग विधि से सम्बन्धित वीडियो उपर्युक्त क्यू०आर०कोड मे सम्मिलित है।

# राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, वाराणसी)

# संस्कृत भाषा-किट आधारित विडियो निर्माण

**मुख्य संरक्षक** : **श्री एम० के० एस० सुन्दरम, प्रमुख सचिव**, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन।

**संरक्षक** : **श्रीमती कंचन वर्मा**, महानिदेशक (स्कूल शिक्षा), उ०प्र० तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

**निर्देशन** : **डॉ० सरिता तिवारी**, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उ०प्र०, लखनऊ।

**समन्वयन** : **डॉ० ऋचा जोशी**, निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

**समीक्षा** : **डॉ० पवन कुमार**, संयुक्त निदेशक(एस०एस०ए०), राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उ०प्र०, लखनऊ, **डॉ० रामसुधार सिंह**, पूर्व विभागाध्यक्ष, यू०पी० कॉलेज वाराणसी, **प्रोफेसर विवेक पाण्डेय**, हण्डिया पी0जी0 कॉलेज, हण्डिया प्रयागराज, **श्री सुदर्शन यादव**, भूतपूर्व प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गोरखपुर, **डॉ० शीला सिंह**, प्रधानध्यापक, राजकीय हाईस्कूल बढ़ैनीकला आराजीलाइन्स वाराणसी।

**सम्पादन एवं लेखन** : **श्रीमती नीलम यादव**, शोध प्रवक्ता (संस्कृत), राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी,

**श्री देवेन्द्र कुमार दुबे**, शोध प्रवक्ता (संस्कृत), राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी,

**डॉ० लीना केशवानी**, प्रवक्ता (संस्कृत), राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, मलदहिया, वाराणसी, **डॉ० सरोज कुमार पाण्डेय**, स०अ०, प्रा०वि० गाड़ीवानपुर, काशीविद्यापीठ, वाराणसी, **डॉ० नमिता सिंह**, स० अ०, प्रा० वि० चिरईगाँव, वाराणसी, **डॉ० भानुप्रकाश धर द्विवेदी**, स०अ०, क०वि० बढ़ैनीकला, आराजीलाईन्स, वाराणसी, **डॉ० अखिलेश कुमार पाण्डेय**, स०अ०, प्रा०वि० होलापुर, हरहुआ, वाराणसी, **डॉ० रवीन्द्र यादव**, प्रा० वि०हडियाडीह, चोलापुर, वाराणसी, **श्रीमती रीता सिंह**, स०अ०, प्रा०वि० शाहपुर, चिरईगाँव, वाराणसी, **श्रीमती बेबी फातमा**, स०अ०, प्रा०वि० उमरहा प्रथम, चिरईगाँव, वाराणसी, **श्रीमती सुषमा यादव**, प्रा०वि० कटरिया, नियमताबाद, चंदौली, **श्रीमती पूनम मिश्रा**, स०अ०, क०वि० सरसहवां, हरहुआ, वाराणसी, **श्रीमती ज्योति श्रीवास्तव**, अनुदेशक, पू०मा०वि० गुरैनी, शाहगंज, जौनपुर, **श्री तारकेश्वर चौरसिया**, कन्या क० वि०, रेवतीपुर, गाजीपुर, **सुश्री शिवांगी सिंह**, क० वि०, विशुनपुर, पिपरहिया, सदर, गाजीपुर, **श्री आकाश कुमार श्रीवास्तव**, उ० प्रा० वि०, चौराबोझ, मरदह, गाजीपुर, **श्री कृष्ण कुमार सिंह**, प्रा० वि०, बेला, चोलापुर, वाराणसी, **श्रीमती सौम्या सिंह**, प्रा० वि० परानापट्टी, चोलापुर,वाराणसी, **श्रीमती संध्या शर्मा**, प्रा० वि० चुमकुनी, चोलापुर, वाराणसी, **श्रीमती अलका श्रीवास्तव**, क० वि० सरैया, चिरईगांव, वाराणसी,

**कम्प्यूटर ले आउट** : **श्री अजीत कुमार कौशल**, कनिष्ठ सहायक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी, **श्री मनोज कुमार यादव**, प्रा० वि० चकचमरान, बड़ागाँव, वाराणसी, **श्रीमती खुशबू**।

**आभार** : संस्कृत भाषा-किट के विकास में अनेक पुस्तकों की पाठ्यसामग्रीयों का अवलोकन एवं उपयोग किया गया है। हम सभी लेखकों तथा सम्पादकों के प्रति आभारी हैं।

# निदेशक की कलम से

संस्कृत को विश्व की परिष्कृत एंव प्राचीनतम भाषा माना जाता है। संस्कृत का प्रयोग वेदों, उपनिषदों एवं दार्शनिक ग्रन्थों के साथ–साथ विज्ञान, गणित और चिकित्सा के प्राचीन ग्रन्थों में भी किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक संस्कृत को एक समृद्ध विकल्प के रूप में प्रस्तुत करने का सुझाव देती है।

उत्तर प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में बच्चों को प्रारम्भिक स्तर से ही संस्कृत भाषा से जोड़ने हेतु जहाँ एक ओर कक्षा 1 और 2 की हिन्दी पाठ्यपुस्तक में संस्कृत के बालगीत एवं सरल परिवेशीय शब्दों के रूप में समावेशित किया गया है, वहीं कक्षा–3 से संस्कृत मुख्य विषय के रूप में सम्मिलित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 में प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण हेतु गतिविधि आधारित तथा कला समन्वित शिक्षण का सुझाव दिया गया है। साथ ही इस नीति के अध्याय–4 में संस्कृत भाषा शिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। इन सुझावो के दृष्टिगत यह आवश्यक है कि प्राथमिक कक्षाओं में संस्कृत को सरल, सहज एवं आकर्षक स्वरूप में बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया जाए ताकि वे स्वयं संस्कृत सीखने के लिए प्रवृत्त हों।

इस दिशा में राज्य हिन्दी संस्थान उ0प्र0 वाराणसी द्वारा प्रारम्भिक स्तर के पाठ्यक्रम में सम्मिलित अवधारणाओं पर आधारित संस्कृत भाषा किट का निर्माण किया गया जिसमें कुल 27 सामग्री हैं। इन सामग्रियों में चित्र–कार्ड, कहानी–कार्ड, फ्लैश–कार्ड, शब्द–कार्ड, क्रिया–कार्ड, बालकथा, बालगीत, संस्कृत सीखने हेतु लूडो तथा साँपसीढ़ी सम्मिलित है। प्राथमिक स्तर से ही बच्चों में संस्कृत के प्रति रुचि उत्पन्न करने तथा खेल–खेल में संस्कृत सिखाने हेतु ***संस्कृत किट सामग्री के निर्माण एवं प्रयोगविधि आधारित प्रशिक्षण मॉड्यूल*** का निर्माण वर्ष **2023–24 में** किया गया है। इस संस्कृत भाषा किट आधारित प्रशिक्षण मॉड्यूल के निर्माण में अनेको विशेषज्ञों द्वारा सहयोग किया गया है। इस मॉड्यूल में संस्कृत शिक्षण हेतु आकर्षक, रंग–बिरंगी तथा रोचक सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग की विधि शिक्षकों एवं बच्चों हेतु साझा की गयी है।

संस्कृत भाषा किट करके सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है। किट में सम्मिलित समस्त सामग्री के निर्माण एवं प्रयोगविधि पर आधारित वीडियो का भी विकास किया गया है जिसको देखकर आसानी से सभी सामग्री का निर्माण विद्यालय स्तर पर किया जा सकता है। सभी सामग्री अत्यन्त रोचक, कलात्मक एवं आकर्षक है तथा गतिविधि आधारित है। प्रयोग करते समय कक्षा–कक्ष में सभी बच्चों को इसे देखने, छूने तथा गतिविधि करने का अवसर प्राप्त होगा, जिससे संस्कृत भाषा का अधिगम सहज एवं सरल होगा।

आशा है कि ***संस्कृत किट सामग्री के निर्माण एवं प्रयोगविधि आधारित इस प्रशिक्षण मॉड्यूल*** के माध्यम से शिक्षक आसानी से विद्यालय स्तर पर किट का निर्माण कर सकेंगे तथा बच्चे संस्कृत सीखने हेतु उन्मुख होंगे।

**(ऋचा जोशी)**
**निदेशक**
राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश
वाराणसी।

# अनुक्रमणिका


| क्र0सं0 | विषयवस्तु | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| • | सामग्री का उद्देश्य एवं विवरण | 7–8 |
| • | संस्कृत भाषा–किट द्वारा विकसित की जाने वाली दक्षताएं | 9 |
| 1. | प्रतिभागियों का परिचय एवं प्रशिक्षण का उद्देश्य | 10 |
| 2. | बाल-संस्कृत-मञ्जूषा का सामान्य परिचय | 11 |
| 3. | मौखिक भाषा विकास | 12–17 |
| | • अभिवादनम् | |
| | • बालगीतम् एवं बालकथा | |
| | • बालजगत् परिवेशीय–चर्चा | |
| 4. | संस्कृत भाषा में स्वर, व्यंजन एवं संख्याज्ञान | 18–22 |
| | • शब्दों से वर्ण की ओर | |
| | • आनन्दस्य पाठशाला | |
| 5. | संस्कृत – शब्द – भण्डार | 23–32 |
| | • अङ्ग–परिचय: | |
| | • चित्रपट्टिका (वेल्क्रोपट्टी) | |
| | • वर्णानां नामानि | |
| | • मम कुटुम्ब: | |
| | • मेरे अनेक नाम (मम बहुनि नामानि) | |
| | • दृश्यपत्रक (फ्लैशकार्ड) | |
| 6. | संस्कृत – शब्द – निर्माण | 33–35 |
| | • संस्कृत–शब्द–निर्माण: (शब्द पट्टिका) | |
| | • शब्दक्रीडा (तम्बोला) | |
| 7. | संस्कृत वाक्य निर्माण | 35–45 |
| | • वाक्यनिर्माण – चक्रिका | |
| | • अहम् अस्मि | |
| | • संज्ञा एवं क्रियापत्रक (स्टिक फ्लैशकार्ड) | |
| | • धावन–प्रतियोगिता एवं पुरुष–वचन–परिचय: | |
| | • प्रश्नवाचक–शब्दा: | |
| 8. | नैतिकता एवं मूल्यबोध | 46–48 |
| | • सुभाषितानि एवं सूक्तय: | |
| | • प्रतिज्ञा | |
| 9. | संस्कृत – सम्भाषण | 49–53 |
| | • वार्तालाप: | |

- कक्षा–कक्ष के अनुमति–निर्देश वाक्य
- दिनचर्या

10. अभिनय आधारित संस्कृत शिक्षा 54–58
- अंगुलिपुत्तलिका (फिंगर पपेट)
- मुखौटा
- मनोभावाः

11. मूल्यांकन 59–65
- डिब्बे में डिब्बा
- लूडोक्रीडा एवं साँप–सीढ़ीक्रीडा
- आओ मित्र! जोड़ें चित्र

12. समापन 66–67
- पश्च आकलन
- प्रशिक्षण मॉड्यूल साझा करना
- प्रशिक्षण का समापन सत्र एवं प्रमाण पत्र वितरण


## परिशिष्ट


1. पूर्व आकलन प्रपत्र 68–75
2. पश्च आकलन प्रपत्र
3. प्रशिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण बातें
4. प्रशिक्षण के सामान्य नियम–निर्देश
5. भाषा किट : प्रयोग करते समय ध्यान देने योग्य बातें।
6. प्रार्थना
7. प्रशिक्षण हेतु सामग्री
8. संस्कृत भाषा–किट प्रशिक्षण सत्र की रूपरेखा

# भूमिका

संस्कृत शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए समय–समय पर विभिन्न महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे हैं। इसी क्रम में वर्ष राज्य हिन्दी संस्थान द्वारा में संस्कृत शिक्षण को रुचिकर एवं बच्चों के अधिकाधिक जुड़ाव की दृष्टि से कला समन्वित संस्कृत शिक्षण पर कार्य किए जाने का संकल्प लिया गया। विदित है कि एन0ई0पी0–2020 कला समन्वित शिक्षा का सुझाव देती है।

इस आलोक में 'कला समन्वित संस्कृत भाषा–किट' के निर्माण विश्वविद्यालय के आचार्यों, राजकीय इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्यों/प्रवक्ताओं, डायट प्रवक्ताओं, संकाय सदस्यों और परिषदीय विद्यालय के शिक्षकों के सहयोग से राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी में विभिन्न कार्यशालाएं की गयी। वाराणसी और भदोही जनपद के परिषदीय विद्यालयों में इस संस्कृत भाषा–किट का परीक्षण किया गया जिसमें परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं बच्चों ने रुचि एवं उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। तदुपरान्त विकसित सामग्री की समीक्षा विशेषज्ञों से कराई गयी तथा संस्कृत भाषा किट को अन्तिम स्वरूप दिया गया। संस्कृत भाषा किट में विकसित 27 सामग्रियों में 'अभिवादनम्' एवं 'प्रतिज्ञा' (संस्कृत के छोटे–छोटे अभिवादनपरक वाक्य), 'बालगीतम्' एवं 'बालकथा' (बच्चों के लिए रुचिकर गीतो का संकलन एवं संस्कृत के छोटे–छोटे वाक्यों में लघु कथाएं), 'परिवेशीय–चर्चा' (परिवेश की वस्तुओं के संस्कृत नाम), 'फ्लैशकार्ड' (पशु–पक्षी, सब्जी एवं फूलों के संस्कृत नाम), 'वैलक्रोपट्टी' (एक स्केल पर वैलक्रोपट्टी चिपकी हुई है जिस पर पशुकार्ड, पक्षीकार्ड, फूलों के कार्ड को चिपकाना है), आओ मित्र!जोड़ें चित्र (छोटे–छोटे कार्ड को व्यवस्थित क्रम में लगाते हुए संस्कृत शब्दों का उच्चारण करना), 'संस्कृत–शब्द–निर्माणः' (हलन्त और विसर्ग के साथ पुलिंग, नपुंसकलिंग एवं स्त्रीलिंग शब्दों का निर्माण करना), 'शब्दक्रीडा एवं वर्णानां नामानि' (वर्णों की सहायता से चित्रों के संस्कृत नाम खोजना, रंगों के संस्कृत नाम का अभ्यास), 'डिब्बे में डिब्बा' (संस्कृत गिनती का अभ्यास तथा रंगों के संस्कृत नामों से परिचित कराना), 'अङ्ग–परिचयः एवं मम कुटुम्बः' (मानव शरीर के विभिन्न अंगों का संस्कृत नाम एवं परिवार के सम्बन्धियों के नाम), 'बालजगत्' (कक्षा–कक्ष में प्रयोग होने वाली वस्तुओं के नाम), 'अहम् अस्मि' (विभिन्न व्यवसायों से जुड़े हुए व्यक्तियों से सम्बन्धित परिचय पत्र) इसी प्रकार 'संस्कृत वाक्य निर्माण चक्रिका', 'स्टिक फ्लैश कार्ड', 'धावन प्रतियोगिता', 'पुरुष–वचन परिचयः', 'नैतिकता एवं मूल्यबोध' हेतु 'सुभाषितानि एवं सूक्तयः', 'प्रतिज्ञा', 'सस्कृत सम्भाषण', 'वार्तालापः', 'कक्षा–कक्ष के अनुमति–निर्देश वाक्य', 'दिनचर्या', 'फिंगर पपेट', 'मुखौटा', 'मनोभावाः', 'लूडोक्रीडा एवं साँप–सीढ़ी क्रीडा', 'आओ मित्र! जोड़ें चित्र' आदि समाग्रीयाँ सम्मिलित की गई है।

प्रारम्भिक स्तर से संस्कृत भाषा शिक्षण को नवीन एवं नवाचारी शिक्षण कौशलों से जोड़ने के लिए कला समन्वित संस्कृत भाषा–किट की सामग्री विकसित की गई है। संस्कृत भाषा–किट के अन्तर्गत विकसित की गई सामग्री अत्यन्त रोचक, कलात्मक एवं आकर्षक है। सभी सामग्रियाँ गतिविधि आधारित हैं। सामग्री का प्रयोग करते समय कक्षा–कक्ष में सभी बच्चों को इसे देखने छूने तथा गतिविधि करने का अवसर प्राप्त होगा, जिससे संस्कृत भाषा का अधिगम सहज एवं सरल होगा। आशा है कि इस किट के माध्यम से संस्कृत भाषायी दक्षता की समझ विकसित हो सकेगी एवं बच्चे रुचि एवं उत्साहपूर्वक संस्कृत भाषा सीखने के लिए तत्पर हो सकेंगे।

# सामग्री का उद्देश्य

| क्र0 सं0 | सामग्री | उद्देश्य |
|---|---|---|
| 1. | अभिवादनम् | • नमस्ते, नमामि, नौमि इत्यादि शब्दों का प्रयोग करवाना। |
| | प्रतिज्ञा | • संस्कृत भाषा के प्रति रुचि जागृत करना। |
| 2. | बालगीतम् | • संस्कृत में वातावरण का सृजन करना। |
| | बालकथा | • बच्चों में नैतिक गुणों का विकास करना।<br>• संस्कृत वाक्यों का उच्चारण कराना। |
| 3. | परिवेशीय–चर्चा | • परिवेशीय वस्तुओं के संस्कृत नामों का परिचय कराना |
| 4. | दृश्यपत्रक (फ्लैशकार्ड) | • पशु–पक्षी एवं सब्जियों के संस्कृत नामों से परिचित कराना<br>• दैनिक क्रियाओं के संस्कृत नामों से परिचित कराना |
| 5 | चित्रपट्टिका (वेल्क्रोपट्टी) | • बच्चों को खेल–खेल में संस्कृत सिखाना। |
| 6 | आओ मित्र!जोड़ें चित्र | • छोटे काड्र्स को व्यवस्थित क्रम में लगाते हुए संस्कृत शब्दों का उच्चारण कराना। |
| 7 | शब्दों से वर्ण की ओर | • संस्कृत शब्दों के द्वारा वर्णमाला का ज्ञान कराना<br>• 1 से 10 तक की गिनती का संस्कृत में अभ्यास कराना |
| 8 | आनन्दस्य पाठशाला | वर्णों की सहायता से अमात्रिक संस्कृत शब्दों (हलन्त और विसर्ग युक्त) के निर्माण का अभ्यास। |
| 9 | संस्कृत–शब्द–निर्माण: | हलन्त और विसर्ग के साथ पुलिंग, नपुंसक लिंग एवं स्त्रीलिंग के शब्दों का अभ्यास कराना। |
| 10 | शब्दक्रीडा | वर्णों की सहायता से चित्रों के संस्कृत नाम खोजना । |
| | वर्णानां नामानि | रंगों (वर्णों) के संस्कृत नामों से परिचित कराना |
| 11 | डिब्बे में डिब्बा | संस्कृत गिनती का अभ्यास कराना ।<br>रंगो (वर्णों) के संस्कृत नाम का अभ्यास कराना। |
| 12 | लूडोक्रीडा | फल, फूल, वृक्ष आदि के संस्कृत नाम बताना। |
| | साँप–सीढ़ीक्रीडा | क्रियाओं का परिचय कराते हुए अभ्यास कराना। |
| 13 | अङ्ग–परिचय: | शरीर के अंगों के संस्कृत नाम को जानना एवं उनका प्रयोग कराना। |
| | मम कुटुम्ब: | परिवार के संबंधियों के संस्कृत नामों से परिचित कराना। |
| 14 | अहम् अस्मि | विभिन्न व्यवसायियों (सहयोगियों ) के संस्कृत नामों का अभ्यास कराना |
| 15 | बालजगत् | कक्षा–कक्ष में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं के संस्कृत नामों का अभ्यास कराना। |
| 16 | धावन–प्रतियोगिता | संज्ञा और क्रिया पद को जोड़कर संस्कृत– वाक्य–निर्माण का अभ्यास कराना। |
| | पुरुष–वचन–परिचय: | सर्वनाम शब्दों का विभिन्न लकारों में प्रयोग करते हुए सरल वाक्यों का निर्माण कराना। |

| | | |
|---|---|---|
| 17 | वाक्यनिर्माण–चक्रिका | संज्ञा और क्रियापद को मिलाकर संस्कृत वाक्य निर्माण एवं उसका प्रयोग कराना। |
| 18 | स्टिक फ्लैशकार्ड | संज्ञा एवं क्रिया पदों की सहायता से वाक्य निर्माण कराना। |
| 19 | मनोभावाः | विभिन्न मनोभावों के संस्कृत नामों का अभ्यास कराना। |
| 20 | मेरे अनेक नाम | परिवेशीय वस्तुओं के एक से अधिक नामों से परिचित कराना। |
| 21 | वार्तालापः | कक्षा तथा व्यवहार में प्रयोग होने वाले अनुमति एवं निर्देशात्मक पदों का अभ्यास कराना। |
| 22 | प्रश्नवाचक–शब्दाः | सात प्रश्नवाचक शब्दों की सहायता से प्रश्नवाचक वाक्यों का निर्माण कराना। |
| 23 | सुभाषितानि एवं सूक्तयः | संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध सुभाषितों एवं सूक्तियों के माध्यम से नैतिक मूल्य का विकास कराना |
| 24 | कक्षा–कक्ष के अनुमति–निर्देश वाक्य | अनुमति/ प्रार्थनापरक संस्कृत वाक्यों को बोलने का अभ्यास कराना। |
| 25 | दिनचर्या | दैनिक जीवन में संस्कृत वाक्यों के प्रयोग हेतु प्रेरित कराना। |
| 26 | अंगुलिपुत्तलिका (फिंगर पपेट) | पपेट के माध्यम से पात्रों पर आधारित संस्कृत वाक्यों का अभिनय कराना। |
| 27 | मुखौटा | संस्कृत भाषा में अपने शब्दों में कहानी– सृजन के प्रति प्रेरित कराना। |

# संस्कृत भाषा–किट द्वारा विकसित की जाने वाली दक्षताएं

| क्र0 सं0 | दक्षता | अवधारणात्मक संरचना<br>उपयोग की जाने वाली सामग्री |
|---|---|---|
| 1 | शब्दबोध | ➢ परिवेशीय चर्चा<br>• दृश्यपत्रक (फ्लैशकार्ड)<br>• चित्रपत्रक (वेलक्रोपट्टी)<br>• मम कुटम्बः<br>• आओ मित्र! जोड़ें चित्र<br>• शब्दों से वर्ण की ओर<br>• आनन्दस्य पाठशाला<br>• संस्कृत शब्द निर्माणः<br>• शब्दक्रीडा<br>• वर्णानां नामानि<br>• डिब्बा खेल<br>• अंग परिचयः<br>• बालजगत्<br>• अहम् अस्मि<br>• मेरे अनेक नाम<br>• लूडो क्रीडा |
| | | • पुरुष–वचन–परिचयः<br>• प्रश्नवाचक शब्द |
| 2 | क्रियाबोध | • अभिवादनम्<br>• दृश्यपत्रक (फ्लैशकार्ड)<br>• लूडोक्रीडा<br>• पुरुष-वचन-परिचयः<br>• धावन प्रतियोगिता<br>• वार्तालापः<br>• मनोभावाः |
| 3 | वाक्यबोध | • धावन प्रतियोगिता<br>• वाक्य निर्माण चक्रिका<br>• पुरुष-वचन-परिचयः<br>• स्टिक फ्लैशकार्ड<br>• कक्षा–कक्ष के अनुमति वाक्य<br>• दिनचर्या<br>• सुभाषितानि<br>• प्रतिज्ञा |
| 4 | सृजनात्मक क्षमता | • बालकथा,<br>• बालगीत,<br>• पुरुष-वचन-परिचयः<br>• अंगुलिपुत्तलिका (फिंगर पपेट)<br>• मुखौटा |

1

## प्रतिभागियों का परिचय एवं प्रशिक्षण का उददेश्य

1. **पंजीकरण सामग्री वितरण और पूर्व आकलन प्रपत्र प्रदान किया जाना।**
2. **प्रशिक्षण का उद्घाटन–**
    - राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के सुझावों के आलोक में इस कला समन्वित संस्कृत भाषा किट की आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डालना।
    - संस्था अध्यक्ष द्वारा संस्कृत भाषा शिक्षण की वर्तमान स्थिति और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुशंसाओं के आलोक में संस्कृत प्रशिक्षण के उद्देश्यों का रेखांकन।
    - प्रतिभागियों का संस्कृत में गतिविधि पूर्ण परिचय जिसमें प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा संस्कृत में परिचय का अदान–प्रदान तथा इसके द्वारा संस्कृत बोलने का प्रयास/अवसर देना।
    - प्रशिक्षण को सुचारु रूप से चलाने के लिए सामान्य नियम निर्देशों का सहमतियों के आधार पर निर्धारण।

### प्रशिक्षण का उद्देश्य –

- एन0ई0पी0–2020 कला समन्वित शिक्षा पर बल देती है। इसी के आलोक में संस्कृत भाषा शिक्षण को रुचिकर, आनन्दायक एवं बालकेन्द्रित बनाने के उद्देश्य से 'बाल–संस्कृत–मञ्जूषा' (संस्कृत भाषा–किट) का निर्माण किया गया है।
- एन0ई0पी0–2020 "गतिविधि आधारित" एवं "करके सीखने का" का समर्थन करती है। संस्कृत भाषा–किट की सभी सामग्रियाँ इस प्रकार बनाई गई हैं कि प्रत्येक शिक्षण सामग्री एक से अधिक विषयवस्तु एवं प्रकरण के शिक्षण में सहायक होगी।
- परिषदीय विद्यालयों में उपयोगार्थ इस संस्कृत भाषा–किट के प्रशिक्षण का उद्देश्य संदर्भदाताओं को प्रशिक्षित करना है। जिससे इस किट का प्रभावी उपयोग कक्षा में हो सके।
- प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य "बाल–संस्कृत–मञ्जूषा" नामक संस्कृत भाषा–किट से आप सभी का परिचय कराने इसके उपयोग द्वारा प्राथमिक कक्षा के बच्चों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि एवं आकर्षण उत्पन्न करने; उनके आस–पास मौजूद परिवेशीय वस्तुओं (पशु–पक्षियों, फूलों, फलों, सब्जियों इत्यादि) के संस्कृत शब्दों को सुनने, बोलने की दक्षता विकसित करने; सरल, सहज संस्कृत गीतों का सस्वर वाचन एवं कहानियों को कहने सुनने की दक्षता का विकास करना है, जिससे बच्चे उत्साहपूर्वक संस्कृत भाषा को सीखने के लिए तत्पर हो सकेंगे और संस्कृत की भाषायी दक्षता को सहजता से प्राप्त कर सकेंगे।

### प्रशिक्षण के उपर्युक्त मूल उद्देश्यों के साथ –

- "बाल–संस्कृत–मञ्जूषा"(संस्कृत भाषा–किट)की सभी शिक्षण सामग्रियों का परिचय।
- शिक्षण सामग्रियों की निर्माण–विधि से परिचित कराना।
- शिक्षण सामग्रियों की प्रयोग–विधि का अभ्यास कराना।
- संदर्भदाता द्वारा प्रोजेक्टर के माध्यम से "बाल–संस्कृत–मञ्जूषा" गीत का वीडियो सभी प्रतिभागियों के साथ साझा करना तथा अभ्यास कराना।

# 2

## बाल – संस्कृत – मञ्जूषा का सामान्य परिचय

"बाल–संस्कृत–मञ्जूषा" संस्कृत भाषा–किट राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की संस्तुतियों के आधार पर संस्कृत शिक्षण को प्रभावी, रोचक, कलात्मक एवं आकर्षक बनाने के लिए निर्मित की गई है। जिससे अधिगम सरल सुबोध एवं सरस हो सके। इन सामग्रियों के माध्यम से बच्चे विविध गतिविधियों के द्वारा उत्साह एवं आनन्दपूर्वक संस्कृत भाषा सीखने के लिए प्रेरित होंगे। सन्दर्भदाता के द्वारा निम्नलिखित सामग्रियों एवं किट के परिचय के उपरान्त सत्र का समेकन किया जाएगा।

| क्र0सं0 | सामग्री |
|---|---|
| 1 | अभिवादनम् एवं प्रतिज्ञा |
| 2 | बालगीतम् एवं बालकथा |
| 3 | परिवेशीय–चर्चा |
| 4 | दृश्यपत्रक / फ्लैशकार्ड (संज्ञापद, क्रियापद) |
| 5 | वैलक्रोपट्टी (पशु, पक्षी एवं पुष्प) |
| 6 | आओ मित्र!जोड़ें चित्र |
| 7 | शब्दों से वर्ण की ओर |
| 8 | आनन्दस्य पाठशाला |
| 9 | संस्कृत–शब्द–निर्माणः |
| 10 | शब्दक्रीडा एवं वर्णानां नामानि |
| 11 | डिब्बे में डिब्बा (रंगों एवं संख्याओं का ज्ञान) |
| 12 | लूडोक्रीडा एवं साँप–सीढ़ी क्रीडा |
| 13 | अङ्ग–परिचयः एवं मम कुटुम्बः |
| 14 | अहम् अस्मि |

| क्र0सं0 | सामग्री |
|---|---|
| 15 | बालजगत् |
| 16 | धावन–प्रतियोगिता एवं पुरुष–वचन–परिचयः |
| 17 | वाक्यनिर्माण–चक्रिका |
| 18 | स्टिक फ्लैशकार्ड |
| 19 | मनोभावाः |
| 20 | मेरे अनेक नाम |
| 21 | वार्तालापः |
| 22 | प्रश्नवाचक–शब्दाः |
| 23 | सुभाषितानि एवं सूक्तयः |
| 24 | कक्षा–कक्ष के अनुमति–निर्देश वाक्य |
| 25 | दिनचर्या |
| 26 | अंगुलिपुत्तलिका (फिंगर पपेट) |
| 27 | मुखौटा |

## 3

# मौखिक भाषा विकास

- प्रायः यह देखा गया है कि बच्चे जिन चीजों को स्वयं करके सीखते हैं उनका ज्ञान स्थायी होता है। ऐसे में यह आवश्यक हो गया है कि बच्चों के समक्ष संस्कृत की अवधारणाओं को मूर्त अर्थात् टी0एल0एम0 के रूप में प्रस्तुत किया जाए। इसी को ध्यान में रखते हुए मौखिक गतिविधियों के लिए निम्नांकित सामग्री किट में सम्मिलित की गई है।
- संदर्भदाता यह भी बताएंगे कि उ0प्र0 के परिषदीय विद्यालयों में संस्कृत एक विषय के रूप में है । इसके साथ ही प्रारंभिक स्तर से बच्चों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा 1 एवं 2 की हिन्दी की पुस्तक में संस्कृत बालगीत एवं छोटे–2 परिवेशीय शब्दों को शामिल किया गया है।

## सामग्री संख्या :– (1) अभिवादनम्

### उद्देश्य :–

- प्रणमामि, नमामि, अभिवादनम् इत्यादि संस्कृत भाषा के अभिवादनपरक शब्दों से परिचय कराना।
- संस्कृत में अभिवादन करने की आदत विकसित करना।
- अभिवादन के अपने भारतीय संस्कृति के पारम्परिक तरीके को बताना।
- संस्कृत भाषा–प्रयोग के प्रति रुचि एवं आकर्षण जागृत करना।

### आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

### निर्माण–विधि –

चित्र 1 – सर्वप्रथम 1 फीट चौड़ी और 1.5 फीट लंबी दफ्ती को काटकर उसी अनुपात में चार्ट पेपर को काटकर उस पर चिपका लेंगे।

चित्र 2 – चार्ट पेपर पर चित्रानुसार गोल आकृति बनाएंगे।

चित्र 3 – पेपर पर गोल आकृति बना कर उसमें नमस्कार की मुद्रा का चित्र बनाएंगे।

चित्र 4 – चित्रानुसार आकृति में रंग भरेंगे।

चित्र – 1

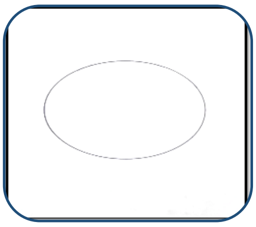
चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र 5 – छोटो–छोटी पट्टिकाएँ काट कर उस पर अभिवादन के संस्कृत शब्द लिखेंगे ।

चित्र 6 – सबसे ऊपर शीर्षक 'अभिवादनम्' लिख कर एक ओर 'सादरम्' एवं दूसरी ओर 'सस्नेहम्' की पट्टिकाएँ लगाएंगे।

चित्र 7 – अब बची हुई पट्टिकाओं को नमस्कार मुद्रा के चारों तरफ चिपकाएंगे।

चित्र 8 – चित्रानुसार किनारों को चारों तरफ रंगीन टेप या रिबन से सजाएंगे।

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

## प्रयोगविधि–

- फलक पर लिखे हुए शब्दों का प्रतिदिन उच्चारणाभ्यास कराएँ।
- लिखे हुए शब्दों को बच्चों को स्वयं पढ़ने के लिए कहें एवं यथावश्यक सहायता भी करें।
- बच्चों को प्रतिदिन संस्कृत में अभिवादन के लिए प्रेरित करें।

## अधिगम सम्प्राप्ति :–

- बच्चे अभिवादन के लिए नमामि, नौमि, प्रणमामि, नमस्कारः, अभिवादन्, आदि संस्कृत शब्दों को बोलते हैं।
- बच्चे अभिवादन करते समय बड़ों के प्रति आदर एवं उम्र में छोटों के प्रति स्नेह का भाव प्रदर्शित करते हैं।

# सामग्री संख्या :– (2) बालगीतम् एवं बालकथा

## उद्देश्य :–

- सरल एवं रोचक बालगीतों के गायन द्वारा संस्कृतमय वातावरण बनाना।
- मनोरंजक ढंग से संस्कृत गीतों एवं बालकथाओं का अर्थबोध कराना।
- बालकथा के माध्यम से बच्चों में नैतिक गुणों की अभिवृद्धि करना।

## आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

## निर्माण – विधि :–

चित्र 1 – सर्वप्रथम पेपर या चार्ट पेपर को कैलेण्डर के आकार में काट लेंगे अथवा पुराने टेबल कैलेण्डर का प्रयोग करेंगे।

चित्र 2 – काटे गये पेपर पर संस्कृत के छोटे–छोटे सरल गीतों अथवा कविताओं को लिखेंगे।

चित्र 3 – कविता के अनुसार चित्रों को स्वयं बनाएँगे अथवा कहीं से काटकर चिपका लेंगे।

चित्र – 1

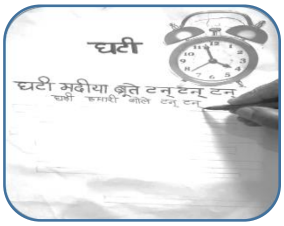


चित्र – 2

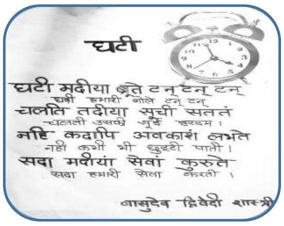


चित्र – 3

चित्र 4 – कविता को आकर्षक बनाने के लिए पेज को विभिन्न रंगों से रंगेंगे।

चित्र 5 – लिखी हुई कविताओं को कैलेण्डर के पेज पर चिपका लेंगे।

चित्र 6 – इस प्रकार संस्कृत कविताएँ कैलेण्डर के रूप में तैयार हो जाएगी।

चित्र – 4

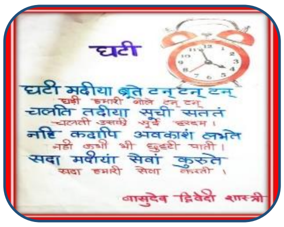


चित्र – 5

चित्र – 6

**नोट : इसी प्रकार कैलेण्डर के दूसरी तरफ 'बालकथा' के लिए चित्र तैयार कर लें।**

## प्रयोग – विधि :–

- संस्कृत कविता का उचित हाव–भाव के साथ गायन करेंगे एवं बच्चों से अनुगायन करवाएंगे।
- संस्कृत कविता का अर्थबोध रोचक तरीके से कराएंगे।
- उचित हाव–भाव के साथ बालकथा को कहने–सुनने का अभ्यास कराएंगे।

## अधिगम सम्प्राप्ति :–

- बच्चे संस्कृत भाषा के सरल, रोचक बालगीतों का सस्वर गायन कर लेते हैं।
- सरल संस्कृत बालकथाओं का अर्थबोध कर लेते हैं एवं संक्षेप में अपने शब्दों में कह लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (3) बालजगत्

**उद्देश्य :–**

- कक्षोपयोगी वस्तुओं के संस्कृत नामों से परिचित कराना और बोलने का अभ्यास कराना।
- संस्कृतमय वातावरण का सृजन करना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) आदि।

**निर्माण – विधि :–**

चित्र 1 – दफ्ती या पुराने निमंत्रण–पत्र को वर्गाकार या आयताकार काटकर उस पर चार्ट पेपर चिपका लेंगे।

चित्र 2 – कार्ड पर चित्र को बनाएंगे अथवा चिपकाएंगे।

चित्र 3 – चित्र को आकर्षक बनाने के लिए रंगों का प्रयोग करेंगे।

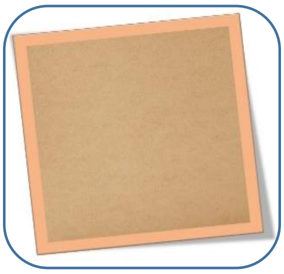

चित्र – 1

चित्र – 2

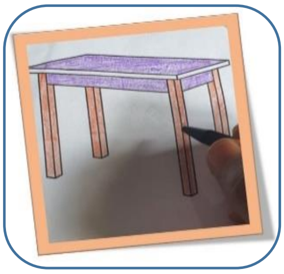

चित्र – 3

चित्र 4 – कार्ड पर बनी वस्तु का नाम संस्कृत में लिखेंगे।

चित्र 5 – इसी प्रकार कक्षा में प्रयोग होने वाली अन्य परिवेशीय वस्तुओं के कार्ड बना लेंगे।

चित्र 6 – कार्डों को व्यवस्थित करके स्क्रैप बुक का स्वरूप देंगे।

चित्र – 4

चित्र – 5

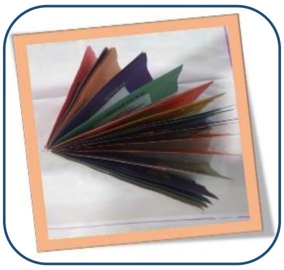

चित्र – 6

**प्रयोग – विधि :–**

बालजगत् नामक स्क्रैप बुक में दी गई वस्तुओं के संस्कृत नामों के उच्चारण का अभ्यास कराएंगे। प्रतिदिन प्रार्थना–सभा में संस्कृत में प्रतिज्ञा की पंक्तियों का अभ्यास कराया जाएगा।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे कक्षा–कक्ष की वस्तुओं के संस्कृत नामों को बोलते हैं।

## सामग्री संख्या :– (4) परिवेशीय–चर्चा

**उद्देश्य :–**

- परिवेशीय वस्तुओं, जीवजन्तुओं, फलों–फूलों, पेड़–पौधों से जुड़ाव एवं उनके संस्कृत नामों का उच्चारणाभ्यास कराना।
- संस्कृत भाषा के प्रति रुचि जागृत करना।
- सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने हेतु प्रेरित करना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

**निर्माण – विधि :–**

चित्र 1 – सर्वप्रथम 1 फीट चौड़ी और 1.5 फीट लंबी दफ्ती को काटकर उसी अनुपात में चार्ट पेपर को काटकर उस पर चिपका लेंगे।

चित्र 2 – उस पर पेंसिल से चित्रानुसार आकृति बनाएँगे। आकृति को स्केच से दोहराएंगे।

चित्र – 1

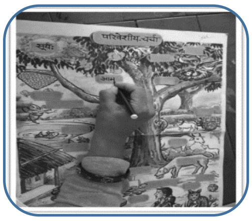

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र 3 – इसे आकर्षक बनाने के लिए आकृति के मध्य रंगेंगे तथा आकृति के बाहरी भाग को बैगनी रंग से रंगेंगे।

चित्र 4 – अंत में इसके चारों ओर रिबन या रंगीन टेप से किनारा बना देंगे और मोतियों, सितारों या स्टिकर से सजा लेंगे।

चित्र – 4

चित्र – 5

**प्रयोग–विधि :–**

शिक्षक कक्ष में आकृति चार्ट पर अंकित चित्रों की सहायता से उनकी पहचान कराएंगे। प्रत्येक के स्थानीय नामों के साथ उनके संस्कृत नामों का उच्चारण अभ्यास कराएंगे। यह प्रक्रिया एक से अधिक दिनों में पूरा करेंगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे अपने आस–पास की वस्तुओं (पेड़–पौधों, जीव–जन्तुओं, फलों–फूलों, घरेलू उपयोग की वस्तुओं, बर्तनों इत्यादि ) को पहचान लेते हैं और उनके संस्कृत नामों को बोल लेते हैं।
- दैनिक व्यवहार में उपर्युक्त परिवेशीय वस्तुओं के प्रति लगाव व्यक्त करते हुए उपयोगिता को बाता लेते हैं।

**गतिविधि :–**

उपर्युक्त सामग्रियों का वीडियो साझा करने के उपरान्त प्रतिभागियों का समूह बनाकर आवश्यक स्टेशनरी का वितरण करेंगे। प्रतिभागी शिक्षक समूह में सामग्री का निर्माण करेंगे तथा प्रत्येक समूह से निर्माण – विधि एवं प्रयोगविधि का प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

**समेकन :–**

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण ढंग से सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा विद्यालय स्तर पर सामग्री के प्रयोग–विधि की वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएंगे।

4

# संस्कृत भाषा में स्वर, व्यंजन और संख्याओं का ज्ञान

**उद्देश्य :–**

भावों, विचारों के आदान–प्रदान तथा तर्क चिंतन और कल्पना करने का माध्यम भाषा कहलाती है। भाषा की मूल इकाई वर्ण होती है परन्तु व्यावहारिक जीवन में हम सभी का परिचय शब्दों से पहले होता हैं। प्राथमिक स्तर के छात्र भी विभिन्न शब्दों से परिचित होते हैं परन्तु उन शब्दों में प्रयुक्त स्वर–व्यंजन का ज्ञान नहीं होता है । संस्कृत के स्वर–व्यंजन के साथ–साथ दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाली आरम्भिक संख्याओं का परिचय सरल एवं रोचक तरीके से कराने के लिए संस्कृत भाषा किट में निम्नलिखित शिक्षण–सामग्रियों को समाहित किया गया है।

(क) शब्दों से वर्ण की ओर

(ख) आनन्दस्य पाठशाला

- संदर्भदाता शब्दों से 'वर्ण की ओर' और 'आनन्दस्य पाठशाला' शिक्षण सामग्री पर चर्चा करेंगे तथा इसके निर्माणविधि एवं प्रयोगविधि की वीडियो दिखाएँगे।

गतिविधि :–

कक्षाकक्ष में प्रतिभागियों के संख्या के अनुरूप समूह बनाकर प्रत्येक समूह को किसी एक वर्ण से बनने वाले बिना मात्रा के कुछ शब्द लिखने को कहेंगे। प्रत्येक शब्द को संस्कृत भाषा में बनाने के लिए विसर्ग एवं हलन्त का प्रयोग कराते हुए शिक्षण–सामग्री 'शब्दो से वर्ण की ओर' एवं 'आनन्दस्य पाठशाला' शिक्षण–सामग्री का उपयोग करते हुए गतिविधि कराएंगे।

## सामग्री संख्या :– (1) शब्दों से वर्ण की ओर (स्वर, व्यंजन एवं संख्याएं)

**उद्देश्य :–**

- संस्कृत शब्दों के माध्यम से वर्णों की पहचान एवं उच्चारण कराना।
- संस्कृत शब्द–भण्डार में वृद्धि करना।
- बच्चों को संस्कृत में 1 से 10 तक की संख्याओं का ज्ञान कराना।
- दैनिक जीवन में संस्कृत संख्याओं का प्रयोग करने हेतु बच्चों को प्रेरित करना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण–पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

**निर्माण – विधि :–**

चित्र 1 – सर्वप्रथम A 4 साइज पेपर या चार्ट पेपर लेंगे।

चित्र 2 – पेपर के एक ओर स्वर या व्यंजन में से कोई एक वर्ण तथा दूसरी ओर उस वर्ण से आरम्भ होने वाले संस्कृत शब्दों को लिखेंगे।

चित्र – 1

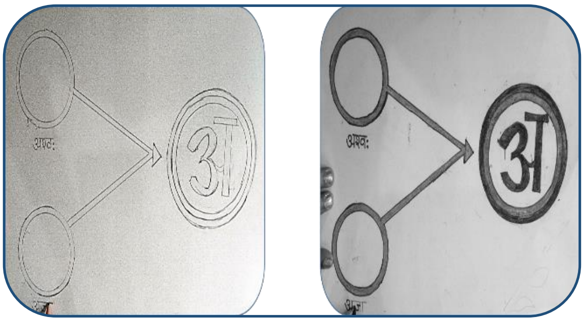


चित्र – 2

चित्र 3 – शब्द के ऊपर उसका चित्र स्वयं बनाकर अथवा कहीं से काट कर चिपका लेंगे।

चित्र 4 – चित्रों को आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न रंगों से रंगेंगे।

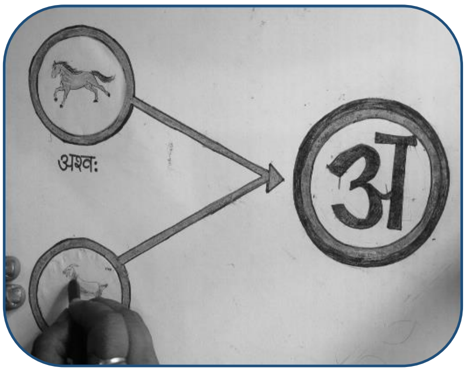


चित्र – 3

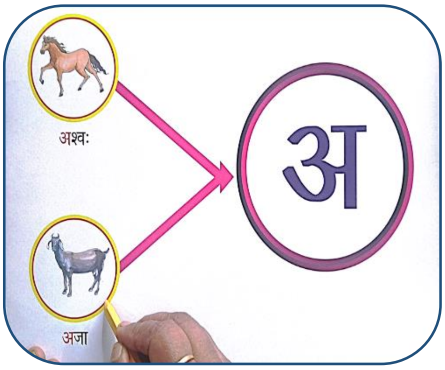


चित्र – 4

चित्र 5 – चित्र चार्ट की सहायता से अन्य संस्कृत शब्दों को भी बताएंगे।
चित्र 6 – सर्वप्रथम A 4 साइज पेपर या चार्ट पेपर लेंगे।
चित्र 7 – पेपर पर एक ओर संस्कृत संख्यावाचक शब्दों को लिखेंगे तथा उसके समीप संख्याएं– 1, 2, 3... लिखेंगे।

चित्र – 5

चित्र – 6

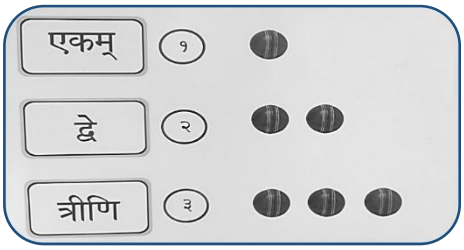


चित्र – 7

चित्र 8 – संख्या की दाईं ओर संख्यानुसार चित्र बनाएंगे अथवा काट कर चिपकाएंगे।

चित्र 9 – चित्रों को आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न रंगों से रंगेंगे।

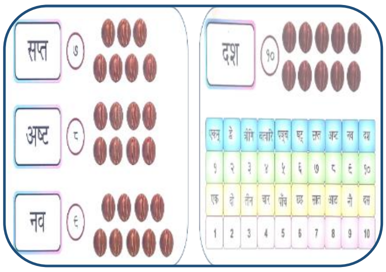


चित्र – 8

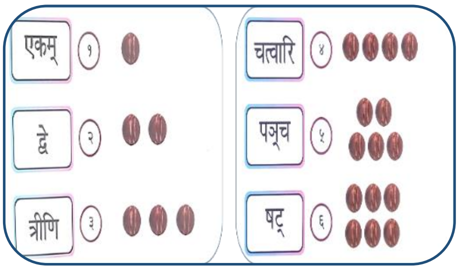


चित्र – 9

**प्रयोग – विधि :–**

- शिक्षक/प्रशिक्षक चित्रों से संस्कृत शब्दों की पहचान कराएँगे।
- शब्दों के माध्यम से वर्णों की पहचान कराते हुए उच्चारणाभ्यास कराएँगे।
- कार्ड्स के माध्यम से संस्कृत संख्यावाचक शब्दों के उच्चारण का अभ्यास कराएँगे।
- परिवेश में उपलब्ध सामग्री द्वारा संस्कृत में गिनती का अभ्यास कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे संस्कृत शब्दों और उनके चित्रों के माध्यम से वर्णों की पहचान एवं उच्चारण कर लेते हैं।
- बच्चे 1 से 10 तक की संख्याओं को संस्कृत संख्याओं के रूप में बोल लेते हैं।
- संस्कृत शब्दों तथा 1 से 10 तक की संस्कृत संख्याओं का प्रयोग कर लेते हैं

## सामग्री संख्या :– (2) आनन्दस्य पाठशाला

**उद्देश्य :–**

- खेल–विधि से वर्ण और उससे संबंधित चित्र की पहचान कराना।
- खेल–खेल में वर्ण और उससे संबंधित शब्दों को सिखाना।
- विसर्ग (:) और हलन्त ( ् ) युक्त वर्णों के लिए शीट तैयार कराना।
- गतिविधि के द्वारा हलन्त ( ् ) एवं विसर्ग ( : ) लगाकर नए शब्दों की रचना करवाना।

## आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोती, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

## निर्माण – विधि :–

चित्र 1 – सबसे पहले फ्लैक्स शीट पर शीर्षक लिखने के लिए जगह छोड़कर 35 वर्गाकार खाने बना लेंगे जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। शीट के सबसे ऊपरी जगह पर 'आनन्दस्य पाठशाला' लिख देंगे।

चित्र 2 – शीट के ऊपरी हिस्से पर टाँगने के लिए छेद बना देंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र 3 – अब प्रत्येक खानों के पीछे टेप और फेवीक्विक की सहायता से मैग्नेट (चुम्बक) चिपका लेंगे।

चित्र – 3

चित्र 4 – वर्गाकार लोहे की छोटी शीट पर एक तरफ वर्ण और दूसरी तरफ उससे शुरू होने वाले संस्कृत शब्द चित्र सहित चिपका देंगे।

चित्र – 4

**प्रयोग—विधि :—**

- कक्षा में कैलेण्डर को टाँग कर उसमें वर्णों के कार्ड को खाने में लगाकर वर्णमाला का अभ्यास कराएंगे।
- 2 या 3 बच्चों को बुलाकर खानों में वर्णों के कार्डों को विसर्ग (:) के कार्ड के साथ लगाकर अमात्रिक संस्कृत शब्दों का अभ्यास कराएंगे, जैसेः—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **ख** | **ग** | **:** | **खगः** |

- कक्षा के बच्चों से वर्ण तथा हलन्त की कार्डों के माध्यम से नए संस्कृत शब्दों का निर्माण कराएंगे, जैसेः—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **फ** | **ल** | **म्** | **फलम्** |

**अधिगम सम्प्राप्ति :—**

- बच्चे खेलविधि द्वारा परिचित चित्रों से वर्णों को तथा उनसे बनने वाले शब्दों को पढ़ एवं बोल लेते हैं।
- रोचक तरीकों से हिन्दी शब्दों के साथ हलन्त एवं विसर्ग लगाकर संस्कृत शब्द बना लेते हैं।

**गतिविधि :—**

उपर्युक्त सामग्रियों का वीडियो साझा करने के उपरान्त प्रतिभागियों का समूह बनाकर आवश्यक स्टेशनरी का वितरण करेंगे। प्रतिभागी शिक्षक समूह में सामग्री का निर्माण करेंगे तथा प्रत्येक समूह से निर्माण—विधि एवं प्रयोग—विधि का प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

**समेकन :—**

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण ढंग से सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा विद्यालय स्तर पर सामग्री के प्रयोग—विधि का वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएंगे।

5

# संस्कृत–शब्द–भण्डार

**उद्देश्य :–**

किसी भाषा को आत्मविश्वास के साथ बोलने के लिए शब्द भंडार सोपान की तरह सहायक होता है । प्रायः विद्यार्थी अपने आसपास के समाज ,परिवेश ,कुटुंब आदि को हिंदी में अभिव्यक्त करते रहते हैं । बाल संस्कृत मञ्जूषा में इस उद्देश्य की प्राप्ति अर्थात् शब्द–भंडार की अभिवृद्धि के लिए कुछ सामग्री रखी गई है। अङ्ग–परिचयः वेलक्रोपट्टी, वर्णानां नामानि,मम कुटुम्बः, मेरे अनेक नाम, फ्लैश कार्ड आदि सभी सामग्रियाँ कलासमन्वित एवं आकर्षक ढंग से तैयार की गई हैं तथा अलग–अलग विधियों से बच्चों का संस्कृत–शब्द–भंडार बढ़ाने में निश्चित ही सहायक हैं।

## सामग्री संख्या :– (1) अङ्ग–परिचयः

**उद्देश्य :–**

- मानव शरीर के विभिन्न अङ्गों के संस्कृत नामों से परिचित कराना।
- संस्कृत शब्दों के दैनिक व्यवहार में अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित करना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोती, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

**निर्माण–विधि :–**

चित्र 1 – सर्वप्रथम चार्ट पेपर के आधे भाग पर एक बच्चे का चित्र बनाएंगे।

चित्र 2 – इस चित्र को आकर्षक बनाने के लिए इसमें रंग भर देंगे।

चित्र 3 – चार्ट पेपर से बच्चे के चित्र को काट लेंगे।

चित्र 4 – A 4 साइज के कागज पर बराबर दूरी पर शरीर के अंगों जैसे– कान, नाक, आँख, जिह्वा, दाँत और बाल के चित्र स्वयं बनाएंगे या कहीं से संकलित करके चिपका लेंगे।

चित्र 5 – इन चित्रों को आकर्षक बनाने के लिए इनको रंगेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

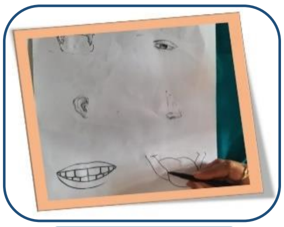

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र 5 – रंगने के बाद प्रत्येक चित्र के नाम संस्कृत में लिखेंगे।
चित्र 6 – इन चित्रों को उनके नाम के साथ आयताकार अथवा वर्गाकार काट लेंगे।
चित्र 7 – चार्ट पेपर के आधे भाग को बीच से मोड़ लेंगे।
चित्र 8 – बच्चे के चित्र के पीछे लंबा रिबन फेविकोल से चिपका कर उसको मुड़े हुए चार्ट पेपर के अंदर के एक भाग में चिपका लेंगे।

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र 9 – चार्ट पेपर के दूसरे भाग पर शरीर के अंगों वाले चित्रों को बराबर दूरी पर चिपका लेंगे।
चित्र 10 – तीन A 4 साइज की दफ्ती को लेकर उसे चित्रानुसार जोड़कर फोल्डर बना लेंगे।
चित्र 11 – फोल्डर से बाहर निकले चित्र को ऊपर और नीचे से वीडियो के अनुसार मोड़ कर रिबन को बाँध लेंगे।

चित्र – 8

चित्र – 9

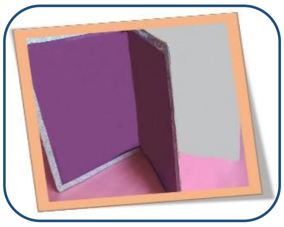
चित्र – 10

चित्र – 11

**प्रयोगविधि :–**

- प्रत्येक टैग लगे अङ्ग के चित्र को बच्चे के चित्र से मिलान करते हुए जैसे– केशाः, नेत्रम्, कर्णः, नासिका, दन्ताः और जिह्वा की पहचान एवं उच्चारण का अभ्यास कराएँगे।
- इसी प्रकार शरीर के अन्य अंगों को भी संस्कृत में बताने एवं बोलने का अभ्यास कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे शरीर के विभिन्न अङ्गों के संस्कृत नामों को जानकर प्रयोग कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (2) चित्रपत्रक (वेल्क्रो पट्टी)

**उद्देश्य :–**

- फल–फूल,सब्जियों,पशु–पक्षी आदि की पहचान कराते हुए इनके संस्कृत नाम से परिचित कराना।
- बच्चों की तार्किक क्षमता का विकास करना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल, रबर, रिबन एवं वेल्क्रोपट्टी (इसमें दो पट्टियाँ आपस में चिपकी होती हैं। एक काँटेदार खुरदरी, दूसरी मुलायम होती है। आप देखेंगे की बैग, जूते या खिलौने आदि में इसका बहुतायत से प्रयोग होता है)

**निर्माण–विधि :–**

चित्र 1 – सबसे पहले एक लकड़ी या प्लास्टिक की स्केलनुमा पट्टी लेंगे। लकड़ी को आकर्षक रंग में पेंट कर देंगे या रंगीन पेपर से लपेट देंगे।

चित्र 2 – वेल्क्रो की कोई पट्टी लकड़ी पर छोटी कील से चिपका देंगे।

चित्र 3 – लकड़ी के दोनों किनारों पर छेद कर देंगे। ताकि इसे दीवार पर स्थिर किया जा सके।

चित्र 4 – अब हम A4 साइज़ का पेपर या शादी के पुराने काड्र्स लेंगे और चित्रानुसार 4–6 भागों में वर्गाकार मोड़ लेंगे।

चित्र – 1

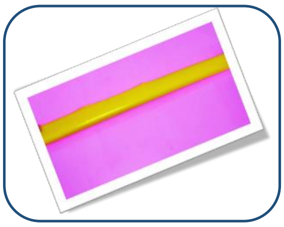

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र 5 – वर्गाकार खानों में पशु–पक्षियों के चित्र बना लेंगे या कहीं से काटकर चिपका लेंगे। उनके संस्कृत नाम भी नीचे लिख लेंगे। चित्रों को सुरक्षित और मजबूत करने के लिए लेमिनेट करवा लेंगे। अब चित्रानुसार उसे काट लेंगे।

चित्र 6 – अब सभी काड्र्स के पीछे वेल्क्रो की दूसरी पट्टी छोटे टुकड़ों के रूप में काटकर स्टैप्लर की सहायता से चिपका देंगे।

चित्र 7 – आप देखेंगे कि सभी कार्ड्स लकड़ी की लंबी पट्टी पर आसानी से चिपक सकते हैं। पट्टी को दीवार या अन्य जगहों पर टाँगने पर कार्ड्स गिरेंगे नहीं। काड्र्स को पट्टी से हटाकर सुरक्षित रख सकते हैं।

चित्र 8 – वेल्क्रो–पट्टी और काड्र्स बन कर तैयार है। इन कार्ड्स पर अन्य विषयों के चित्र भी चिपकाकर बच्चों को उसके बारे में बता सकते हैं। इस प्रकार यह अन्य विषयों के लिए भी उपयोगी है।

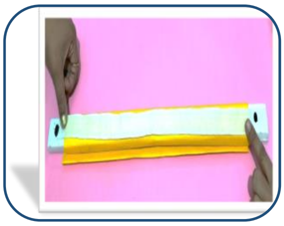

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

चित्र – 9

चित्र – 10

**प्रयोग–विधि :–**

- वेल्क्रो लगी लकड़ी की लंबी पट्टी को दीवार,फर्श,मेज आदि पर स्थिर कर देंगे । बच्चों से क्रमवार पशु–पक्षियों,फलों, आदि के काड्र्स चिपकाने को कहेंगे। इससे बच्चे समूह से संबंधित काड्र्स की पहचान कर सकेंगे। काड्र्स चिपकाकर उनके संस्कृत नाम का उच्चारण करवाएँगे। शुद्ध–शुद्ध संस्कृत शब्दों को कक्षा–कक्ष में पट्टी की सहायता से बार–बार उच्चारण करवा कर उनके शब्द भंडार में वृद्धि करेंगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे पशु–पक्षी, फल–फूल, सब्जियों आदि के संस्कृत नामों को जानते एवं प्रयोग करतें हैं।

## सामग्री संख्या :– (3) वर्णानां नामानि

### उद्देश्य :–

- वर्णों (रंगों) की पहचान कराना।
- खेलविधि के द्वारा संस्कृत शब्दों का ज्ञान कराना।
- वर्णों (रंगों) के संस्कृत नाम से परिचित कराना।

### आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण–पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल, रबर एवं रिबन इत्यादि।

### निर्माणविधि :–

चित्र 1 – सबसे पहले हम एक चार्ट पेपर लेंगे।

चित्र 2 – चार्ट पेपर के सबसे ऊपर हम शीर्षक (वर्णानां नामानि) लिख लेंगे।

चित्र 3 – फिर हम पेंसिल से तितली का चित्र बना लेंगे ।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र 4 – तितली के पंखों को हम अलग–अलग रंगों से रंगेंगे ।

चित्र 5 – अब प्रत्येक रंग के पंखों पर हम उस रंग का संस्कृत नाम लिख देंगे।

चित्र 6 – अब सभी रंग की पट्टियों को रिबन या टैग के साथ लगाकर चार्ट पेपर के निचले हिस्से पर चिपका देंगे।

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र – 6

**प्रयोगविधि :—**

- बच्चों को तीन समूह में बाँटकर प्रत्येक समूह को खेलने व देखने का अवसर देंगे।
- समूह के बच्चों को संस्कृत वर्ण का नाम बताकर उससे संबंधित पट्टी को चित्र से मिलाने को कहेंगे।
- साथ ही उस वर्ण के संस्कृत नाम का उच्चारण भी कराएंगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :—**

- बच्चे खेल विधि द्वारा रोचक ढ़ंग से वर्णो (रंगों) को पहचान कर उनके संस्कृत नामों का प्रयोग कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :— (4) मम कुटुम्बः

**उद्‌देश्य :—**

- परिवार के संबंधियों के संस्कृत नामों से परिचय कराना।
- अधिकाधिक संस्कृत शब्दों के दैनिक प्रयोग हेतु प्रेरित करना।

**आवश्यक सामग्री :—**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण—पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

**निर्माण—विधि :—**

चित्र 1 — चार्ट पेपर के आधे भाग को बीच से मोड़कर फोल्डर की भाँति बनाएंगे।

चित्र 2 — चित्रानुसार फोल्डर के दोनों ओर दो—दो इंच छोड़कर लगभग आधे पेपर तक रेखा खींचकर निशान लगाएंगे।

चित्र 3 — उसी निशान पर दोनों तरफ से चित्र के अनुसार पेपर काटकर इस पेपर को अंदर की ओर मोड़ लेंगे।

चित्र 4 — अंदर की ओर मुड़े हुए पेपर को बीच से आधा मोड़कर चित्रानुसार आधे भाग तक निशान लगाकर काट लेंगे।

चित्र 5 — मुड़े हुए भाग को खोलने पर बीच वाले भाग को बाहर की तरफ मोड़ देंगे अब हम ऊपर और नीचे दो—दो सीढ़ीनुमा आकृति बना लेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र 6 – चार्ट पेपर के चारों तरफ फेविकोल लगाकर चित्र पर लगे निशान के अनुसार फोल्डर पर चिपका लेंगे।

चित्र 7 – अब परिवार के सम्बन्धियों जैसे– दादा–दादी, माता–पिता, चाचा–चाची, बड़े और छोटे भाई–बहन के चित्र बना लेंगे अथवा कहीं से संकलित कर लेंगे।

चित्र 8 – प्रथम सीढ़ी के ऊपर दादा–दादी के और द्वितीय सीढ़ी पर माता–पिता के चित्र लगा लेंगे।

चित्र 9 – चित्र के अनुसार परिवार के सभी सदस्यों के चित्र चिपका लेंगे।

चित्र 10 – परिवार के सभी सदस्यों के सम्बन्ध वाचक शब्द संस्कृत में लिख लेंगे। जैसे–

| | |
|---|---|
| दादा–पितामहः | दादी–पितामही |
| पिता–पिता | माता–माता |
| चाचा–पितृव्यः | चाची–पितृव्या |
| बड़ा भाई–अग्रजः | बड़ी बहन–अग्रजा |
| छोटा भाई–अनुजः | छोटी बहन–अनुजा |

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

चित्र – 9

चित्र – 10

## प्रयोग–विधि :–

- शिक्षक सामग्री को कक्षा–कक्ष में दिखाते हुए परिवार में प्रयोग होने वाले सम्बन्धवाचक शब्दों का उच्चारण स्वयं करेंगे तथा बच्चों से कराएंगे।
- बच्चों को शब्दों का सही उच्चारण एवं उनका दैनिक जीवन में प्रयोग करने हेतु प्रेरित करेंगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे परिवार के सदस्यों के संस्कृत नामों को जानकर उनका प्रयोग कर लेते हैं।
- परिवार के सदस्यों के संस्कृत नामों का छोटे–छोटे संस्कृत वाक्यों में प्रयोग लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (5) मेरे अनेक नाम (पर्यायवाची शब्द)

**उद्देश्य :–**

- संस्कृत शब्द–भण्डार को बढ़ाना।
- किसी एक वस्तु के विभिन्न नामों को संस्कृत में जानना।
- भाषा की सुन्दरता और प्रभावशीलता को बढ़ाना।

**सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

**निर्माण–विधि :–**

चित्र 1 – सबसे पहले A 4 साइज के पेपर को बीच से मोड़ लेंगे।

चित्र 2 – स्केल की सहायता से रेखा खींचकर पेपर को पाँच बराबर हिस्सों में बाँट लेंगे।

चित्र 3 – सभी हिस्सों में पत्ती की आकृति बना लेंगे अथवा अपनी इच्छानुसार कोई भी आकृति बना लेंगे।

चित्र 4 – जिन शब्दों के पर्यायवाची बताने हैं उनके चित्र बना लेंगे अथवा किसी पुरानी पुस्तक / समाचार पत्र से काट कर चिपका लेंगे।

चित्र 5 – बने हुए पाँचों भागों में से एक भाग में चित्र बनाएंगे अथवा चिपकाएंगे और शेष में उसके पर्यायवाची शब्द लिखेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

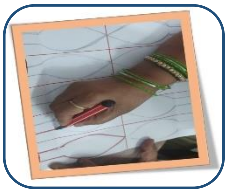
चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र 6 – इसे आकर्षक स्वरूप देने के लिए अपनी पसंद के रंग भरेंगे।

चित्र 7 – पूरे पेज को लेमिनेट करा कर बनी हुई आकृतियों को काट लेंगे।

चित्र 8 – पर्यायवाची शब्द वाली पत्तियों को एक के ऊपर एक व्यवस्थित करके उसे जींस की बटन से जोड़ देंगे।

चित्र 9 – ध्यान रहे कि चित्र वाली पत्ती सबसे ऊपर हो।

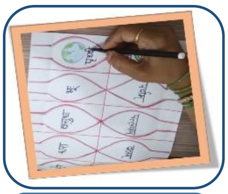
चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

चित्र – 9

**प्रयोग–विधि :–**

- इस सामग्री को हम कक्षा के बच्चों की संख्या के अनुरूप कई सेट में बना लेंगे।
- बच्चो का समूह बनाकर इस सामग्री का वितरण कर देंगे तथा विभिन्न समानार्थी शब्दों का उच्चारण कराएँगे।
- बच्चे अपनी अभ्यास पुस्तिका में विभिन्न समानार्थक शब्दों को लिखकर अभ्यास करेंगे।
- बच्चे शिक्षण सामग्री को दूसरे समूहों से अदला–बदली कर लेंगे, जिससे समाग्री सभी समूहों तक पहुँच सके। गतिविधि के बाद शिक्षक सभी सेट वापस ले लेंगे।
- बच्चो से प्रश्न पूछकर उनके ज्ञान का मूल्यांकन कर सकेंगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे वस्तुओं के एक से अधिक संस्कृत नामों (पर्यायवाची शब्दों) को जानते एवं प्रयोग कर लेते हैं।
- पर्यायवाची शब्दों का अभ्यास कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (6) दृश्यपत्रक (फ्लैशकार्ड)

**उद्देश्य :–**

- पशु, पक्षी, फल, सब्जी एवं क्रियाओं के संस्कृत नामों से परिचित कराना।
- संस्कृत क्रियाओं का अर्थ हाव–भाव के साथ बताना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण–पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

**निर्माण–विधि :–**

चित्र 1 – दफ्ती या मोटे कागज को कैंची से वर्गाकार या आयताकार काटेंगे।

चित्र 2 – काटे गए टुकड़े पर सफेद या रंगीन चार्ट चिपका देंगे।

चित्र 3 – कागज पर पशु, पक्षी, सब्जी एवं दैनिक क्रियाओं के चित्र बना कर रंग भरेंगे या चित्र काट कर चिपका लेंगे।

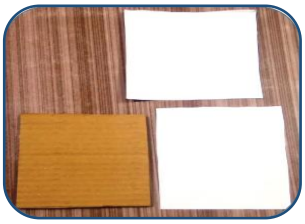

चित्र – 1

चित्र – 2

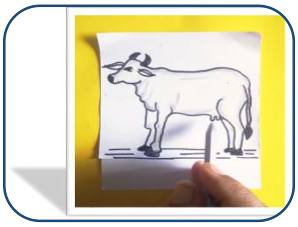

चित्र – 3

चित्र 4 – चित्रों को रंग लेंगे एवं किनारों पर रंगीन टेप लगाएँगे।

चित्र 5 – चित्र के नीचे उनके संस्कृत नाम लिखेंगे।

चित्र 6 – इसी प्रकार से विभिन्न प्रकार के पशुओं, पक्षियों, सब्जियों, फलों, फूलों, क्रियाओं आदि के संस्कृत नाम बता सकते हैं।

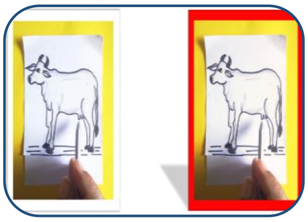

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र 7 – दृश्यपत्रक (फ्लैशकार्ड) का पहेली के रूप में प्रयोग

चित्र 8 – दृश्यपत्रक (फ्लैशकार्ड) को कैंची की सहायता से चित्रानुसार नॉब एण्ड सॉकेट की तरह दो या चार टुकड़ों में काट लेंगे।

चित्र 9 – काटने के पश्चात् दृश्यपत्रक (फ्लैशकार्ड) के विभिन्न टुकड़े तैयार हो जायेंगे।

चित्र – 7

चित्र – 8

चित्र – 9

**प्रयोग–विधि :–**

- शिक्षक दृश्यपत्रक (फ्लैशकार्ड) पर लिखे संस्कृत शब्दों (नामों)का उच्चारणाभ्यास कराएँगे।
- बच्चों को संस्कृत शब्द सुनकर सम्बन्धित कार्ड खोजने के लिए कहेंगे।
- बच्चों का समूह बनाकर सभी पत्रकों का वितरण करेंगे।
- संस्कृत क्रियाओं का अर्थ अभिनय के साथ स्पष्ट करेंगे।
- संस्कृत शब्द सुनकर सम्बन्धित कार्ड के टुकड़े जोड़ने के लिए कहेंगे।
- कार्ड्स के टुकड़ों का वितरण करके उचित टुकड़े का मिलान करने के लिए कहेंगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- पशु, पक्षी, फल, सब्जी एवं क्रियाओं के संस्कृत नामों को जान लेते है।
- संस्कृत क्रियाओं का अर्थ हाव–भाव के साथ अभ्यास कर लेते है।

**गतिविधि :–** उपर्युक्त सामग्रियों की वीडियो साझा करने के उपरान्त प्रतिभागियों का समूह बनाकर आवश्यक स्टेशनरी का वितरण करेंगे। प्रतिभागी शिक्षक समूह में सामग्री का निर्माण करेंगे तथा प्रत्येक समूह से निर्माणविधि एवं प्रयोगविधि का प्रस्तुतीकरण किया जायगा।

**समेकन :–** प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण ढ़ंग से सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा विद्यालय स्तर पर सामग्री के प्रयोगविधि की वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएँगे।

6

# संस्कृत – शब्द – निर्माण

**उद्देश्य :–**

संस्कृत एक शास्त्रीय भाषा है जिसे समझने के लिए प्रायः इसके व्याकरण के प्रति कठिनता की धारणा बनी हुई है हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले अधिकतम शब्द संस्कृत भाषा के हैं। प्रारम्भिक स्तर पर बच्चो को संस्कृत भाषा में रुचि उत्पन्न करने हेतु संस्कृत शब्द–निर्माणः सामग्री बहुत उपयोगी है। इसी को ध्यान में रखकर संस्कृत शब्द निर्माण सामग्री में हिंदी के कुछ शब्दों में हलन्त एवं विसर्ग लगाकर संस्कृत के कुछ सरल शब्दों के निर्माण का तरीका बताया गया है

जैसे–

फल +म् =फलम्, जल+म् =जलम्

राम + : =रामः, नर + : = नरः

वक+ : = वकः, काकः + : = काकः

**सामग्री का विवरण :–**

## सामग्री संख्या :– (1) शब्द–निर्माण–पट्टिका

**उद्देश्य :–**

- हिन्दी के नामों को संस्कृत में बदलने का अभ्यास कराना।
- संस्कृत भाषा की सरलता के प्रति ध्यान आकर्षित कराना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

**निर्माण–विधि :–**

चित्र 1 – पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग शब्दों के लिए अलग– अलग सामग्री बनाएँगे।

चित्र 2 – सबसे पहले दफ्ती या मोटे रंगीन कागज पर चित्रानुसार आकृति बना लेंगे। कैंची की सहायता से इसे काट लेंगे।

चित्र 3 – प्रत्येक पट्टी को चयनित शब्द के अनुसार 4 या 5 भागों में विभाजित कर लेंगे।

चित्र – 1

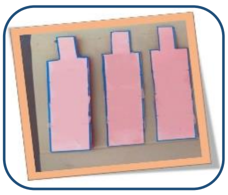

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र 4 – पट्टियों पर पुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग के कुछ शब्द हिन्दी में लिखेंगे।
चित्र 5 – पुल्लिग शब्दों की पट्टी के साथ विसर्ग ( : ) की पट्टी भी रिबन से जोड़ देंगे।
चित्र 6 – स्त्रीलिंग नामों वाली पट्टी में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होगा।
चित्र 7 – नपुंसक लिंग वाली पट्टी के साथ 'म्' की पट्टी रिबन से जोड़ देंगे।

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

**प्रयोग–विधि :–**

- लंबी पट्टी पर लिखे हुए पुल्लिंग हिन्दी नामों के साथ 'विसर्ग' ( : ) पट्टी को जोड़ कर पुल्लिंग के संस्कृत नाम बनाएंगे एवं उच्चारण कराएँगे।
- स्त्रीलिंग नामों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन न होने के कारण इस पट्टी का स्वतंत्र रूप से अभ्यास कराएँगे।
- नपुंसकलिंग नामों वाली पट्टी के साथ 'म्' पट्टी को जोड़ कर संस्कृत नामों का अभ्यास कराएँगे।
- कक्षा में उपस्थित छात्रों के नामों में 'विसर्ग' ( : ) जोड़ कर तथा छात्राओं के नाम बिना परिवर्तन के साथ बोलकर संस्कृत शब्द बनाने का अभ्यास कराएँगे।
- इसी प्रकार वस्तुओं के नामों में 'म्' जोड़ कर संस्कृत नाम के निर्माण का अभ्यास कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे पुल्लिंग हिन्दी नामों के साथ विसर्ग' ( : ) पट्टी एवं नपुसंक लिंड्ग हिन्दी नामों के साथ हलन्त 'म्' पट्टी को जोड़कर संस्कृत शब्दों की रचना कर लेते हैं।
- स्त्रीलिंग हिन्दी नामों में बिना परिर्वत किए वाक्य प्रयोग कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (1) शब्दक्रीडा (तम्बोला)

**उद्देश्य :–**

- बच्चों में शब्द खोज की प्रवृत्ति को जागृत करना ।
- तम्बोला खेल के द्वारा संस्कृत शब्दों का ज्ञान कराना।
- वर्णों को मिलाकर संस्कृत शब्दों का निर्माण कराना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

**निर्माण–विधि –**

चित्र 1 – सर्वप्रथम चार्ट पेपर पर पेंसिल एवं स्केल की सहायता से पंक्ति और स्तम्भ को खींचते हुए चित्र में दिखाए गए सारणी को बनाएँ।

चित्र 2 – सारणी के सबसे बाहरी भाग पर चारों तरफ विभिन्न चित्रों को बनाएँगे।

चित्र 3 – बनाए हुए चित्रों में रंग भरेंगे।

चित्र 4 – पुनः अब हम अन्दर के खानों में अक्षर लिखेंगे।

चित्र 5 – अब अन्दर के खानों को रोचक,आकर्षक एवं हल्के रंगों से भरें जिससे लिखे हुए अक्षर स्पष्ट दिखाई दें।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र – 5

**प्रयोग–विधि–**

- सर्वप्रथम बच्चों को तम्बोला में दिए हुए चित्रों के संस्कृत नाम से परिचित कराते हुए उनका अभ्यास कराएँगे।
- तम्बोला में दिए गए चित्रों के आधार पर समूह बनाएँ। तत्पश्चात् प्रत्येक समूह से एक–एक बच्चे को बुलाकर चित्रों के नाम ढूँढने को कहें, साथ ही उन्हें अपनी अभ्यास–पुस्तिका पर लिखने को कहें।
- छोटे–छोटे सरल संस्कृत शब्दों को देकर उसमें भरने का अभ्यास कराएंगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे खोजबीन एवं तार्किक शक्ति का प्रयोग करते हुए अक्षर जाल (तम्बोला) में छिपे संस्कृत शब्दों की पहचान कर पढ़ लेते हैं।

**गतिविधि :–**

सन्दर्भदाता उपर्युक्त सामग्रियों की वीडियो साझा करने के उपरान्त प्रतिभागियों का समूह बनाकर आवश्यक स्टेशनरी का वितरण करेंगे। प्रतिभागी शिक्षक समूह में सामग्री का निर्माण करेंगे तथा प्रत्येक समूह से निर्माण–विधि एवं प्रयोग–विधि का प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

**समेकन :–**

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण ढंग से सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा विद्यालय स्तर पर सामग्री के प्रयोग–विधि का वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएंगे।

**7**

# संस्कृत – वाक्य – निर्माण

**उद्देश्य :–**

संदर्भदाता वाक्य निर्माण अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु वाक्यांश प्रस्तुत करेंगे।

जैसा कि हम जानते हैं शब्दों का सार्थक समूह वाक्य कहलाता है अर्थात् शब्दों का व्यवस्थित रूप जिससे मनुष्य अपने विचारों–भावों का आदान प्रदान करता है उसे वाक्य कहते हैं। शब्द–निर्माण शिक्षण कराने के पश्चात् वाक्य निर्माण सिखाने के लिए बाल–संस्कृत–मञ्जूषाः में अधोलिखित शिक्षण सामग्रियों को सम्मिलित किया गया हैं–

- वाक्य निर्माण चक्रिका
- अहम् अस्मि
- स्टिक फ्लैशकार्ड
- धावन–प्रतियोगिता
- पुरूष–वचन–परिचयः
- प्रश्नवाचक–शब्दाः

संदर्भदाता उपर्युक्त शिक्षण सामग्रियों की निर्माणविधि एवं प्रयोगविधि क्रमशः प्रदर्शित करेंगे। प्रतिभागियों को चार समूह में बाँट देंगे। सभी समूह को पूर्व निर्मित पर्चियों में से एक पर्ची चुनने कहेंगे जिनमें अलग–अलग शिक्षण–सामग्री का नाम लिखा होगा जिसका निर्माण प्रतिभागियों से कराया जायेगा। निर्धारित समय के पश्चात् सभी समूह को अपने शिक्षण सामग्री का प्रदर्शन और कक्षा– कक्ष में प्रयोग विधि का प्रदर्शन बारी–बारी से करेंगे।

## सामग्री संख्या :– (1) वाक्यनिर्माण–चक्रिका

**उद्देश्य :–**

- संस्कृत में संज्ञा पदों को बताना।
- संस्कृत में क्रिया पदों को बताना।
- संज्ञा एवं क्रियापदों की सहायता से वाक्य रचना कराना।

**सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

**निर्माणविधि :–**

चित्र 1 – सबसे पहले दफ्ती को पाँच गोल आकार में (एक बड़ी, दो मध्यम और दो छोटे) काटेंगे।

चित्र 2 – अब इन गोल दफ्तियों पर रंगीन पेपर (अलग–अलग रंग के) चिपकाएँगे।

चित्र 3 – छोटे आकार की गोल दफ्तियों पर कुछ चित्र बनाएँगे या कहीं से संकलित करके चिपकाएँगे।

चित्र 4 – मध्यम आकार की गोल दफ्तियों पर छोटी दफ्तियों के चित्रों से सम्बन्धित संस्कृत के संज्ञा शब्द लिख लेंगे।

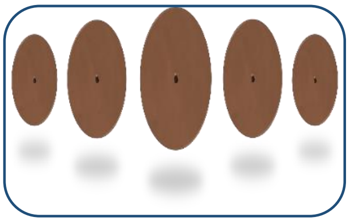
चित्र – 1

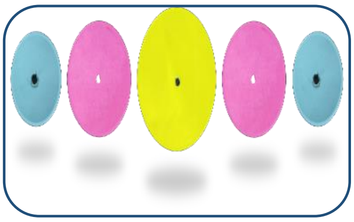
चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

- चित्र 5 – सबसे बड़े आकार की दफ्ती के दोनों ओर संज्ञा शब्द के अनुरूप संस्कृत के क्रिया पद लिख देंगे।
- चित्र 6 – अब पाँचों चक्रों को छोटे, मध्यम, बड़े, मध्यम, छोटे के क्रम में व्यवस्थित करते हुए केन्द्र में नट–बोल्ट, रिपिट, जीन्स की बटन, पिन आदि से इस प्रकार जोड़ेंगे कि वे सभी आसानी से घूम सकें।
- चित्र 7 – इस प्रकार शिक्षण सामग्री वाक्यनिर्माण–चक्रिका तैयार हो जाएगी।

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

**प्रयोगविधि** :–चक्र में लिखे संस्कृत संज्ञा शब्दों की पहचान करते हुए उच्चारणाभ्यास कराएंगे जैसे– कपिला, कुक्कुरः, काकः, कपोतः कच्छपः।

- चक्र में 'क' वर्ण से शुरू होने वाले संस्कृत शब्दों की तरफ ध्यान आकर्षित करेंगे और उच्चारणाभ्यास कराएँगे।
- चक्र में बने क्रिया पदों का अर्थ बताएंगे एवं उच्चारणाभ्यास कराएँगे।
- चक्र को घुमाते हुए संज्ञा एवं क्रियापदों की सहायता से वाक्य रचना कराएँगे ।
- चक्र की सहायता से यह स्पष्ट करेंगे कि एक संज्ञा को अनेक क्रिया पदों के साथ तथा एक क्रिया को अनेक संज्ञा पदों के साथ मिलाकर अधिकाधिक वाक्यों की रचना कर सकेंगे।
- चक्र के माध्यम से यह स्पष्ट करेंगे कि बुक्कति एवं चरति ये दोनों क्रियाएँ क्रमशः कुक्कुरः एवं धेनुः संज्ञा शब्दों के साथ ही प्रयुक्त होंगी।

- चक्रिका के दूसरी ओर भी इसी प्रकार नए संज्ञा एवं क्रिया पद लेते हुए वाक्य रचना कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे संस्कृत संज्ञापदो एंव क्रियापदों की पहचान तथा उच्चारण कर लेते हैं।
- बच्चे संस्कृत संज्ञापदो एंव क्रियापदों की सहायता से सरल वाक्यरचना कर लेते हैं।
- बच्चे एक संज्ञा को अनेक क्रियापदों तथा एक क्रियापद को अनेक संज्ञापदों के साथ मिलाकर वाक्य रचाना कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (2) अहम् अस्मि (परिचय–पत्र)

**उद्देश्य :–**

- लघु वाक्य निर्माण एवं उच्चारणाभ्यास कराना।
- बच्चों में अभिनय क्षमता का विकास कराना।
- उत्तम पुरुष एक वचन के वाक्यों का अभ्यास कराना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

**निर्माण–विधि :–**

चित्र 1 – सर्वप्रथम दफ्ती या मोटे कागज को परिचय–पत्र के आकार में काट लेंगे।

चित्र 2 – काटे गए टुकड़े पर शिक्षिका, सैनिक आदि आजीविका से सम्बन्धित किसी एक का चित्र स्वयं बनाएँगे या कहीं से संकलित कर चिपका लेंगे।

चित्र 3 – बनाए या चिपकाए गए चित्र के नीचे 'अहं शिक्षिका अस्मि' लिखेंगे।

चित्र 4 – चित्र एवं लिखे हुए वाक्य को आकर्षक बनाने के लिए रंग भरेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र 5 – तैयार परिचय–पत्र को लेमिनेशन शीट से लेमिनेट कर लेंगे।

चित्र 6 – रिबन लगाने के लिए पंच–प्लायर अथवा सुविधानुसार किसी वस्तु से छिद्र कर लेंगे

चित्र 7 – छिद्र में रिबन लगाकर उसे गले में पहनने योग्य बनाएँगे।

चित्र 8 – इसी प्रकार आजीविका से सम्बन्धित अन्य परिचय–पत्र बनाएँगे।

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

प्रय

- शिक्षक स्वयं एक परिचय–पत्र को गले में पहनकर हाव–भाव के साथ उच्चारण करेंगे यथा 'अहं सैनिकः अस्मि'।
- बच्चों से अपनी रुचि के अनुसार इन परिचय–पत्र को पहनकर अभिनयात्मक प्रस्तुतीकरण एवं यथासंभव सही उच्चारण कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे चित्रों को देखकर हाव–भाव के साथ 'अहं बालकः अस्मि' 'अहं बलिकाः अस्मि' 'अहं सैनिकः अस्मि' ––– जैसे उत्तम पुरूष एक वचन से बनने वाले वाक्यों का पुनराभ्यास कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (3) स्टिक फ्लैशकार्ड

**उद्देश्य :–**

- अधिकाधिक संज्ञा और क्रिया पदों से परिचित कराना।
- संज्ञा एवं क्रिया पदों को जोड़कर संस्कृत–वाक्य–निर्माण का अभ्यास कराना।

**आवश्यक सामग्री :–** दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

**निर्माणविधि :–**

चित्र 1 – सर्वप्रथम पेंसिल की सहायता से दफ्ती या गत्ते के ऊपर स्टिक वाली आइसक्रीम के आकार की रेखा आकृतियाँ बनाएँगे ।

चित्र 2 – इन सभी आकृतियों को कैंची की सहायता से काट कर अलग कर लेंगे।

चित्र 3 – सभी आकृतियों को अलग करने के बाद उन पर दोनों ओर रंगीन चार्ट पेपर अच्छे ढंग से चिपका लेंगे जिससे उनका स्वरूप आकर्षक लगे।

चित्र 4 – अब तैयार इन रंगीन आकृतियों पर संस्कृत संज्ञा शब्द बड़े आकार में सबसे ऊपर तथा उसके नीचे अपेक्षाकृत छोटे आकार में अनेक संस्कृत संज्ञा शब्दों को लिखेंगे।
चित्र 5 – इस प्रकार यह शिक्षण उपकरण गतिविधि के लिए तैयार है।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र – 5

### प्रयोगविधि :–

- शिक्षक छात्रों को स्टिक फ्लैशकार्ड को दिखाते हुए संज्ञा एवं क्रिया के संस्कृत शब्दों को जोड़कर वाक्य बनाएँगे तथा उच्चारणाभ्यास करवाएँगे ।
- छात्रों में संज्ञा एवं क्रिया शब्द के स्टिक फ्लैशकार्डों को बाँटकर 2 समूह बनाएंगे एवं बारी–बारी से संस्कृत वाक्य बनाने को कहेंगे।

### अधिगम सम्प्राप्ति :–

- बच्चे संज्ञा एवं क्रियापदों को जोड़कर वाक्य बना लेते हैं और उन वाक्यों को बोल लेते हैं।

### समेकन :–

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा प्रयोग सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा विद्यालय स्तर पर सामग्री के प्रयोगविधि की वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएँगे।

## सामग्री संख्या :– (4) पुरुष–वचन–परिचयः

### उद्देश्य :–

- प्रथम पुरुष,मध्यम पुरुष एवं उत्तम पुरुष के एकवचन,द्विवचन एवं बहुवचन के विभिन्न रूपों को बताना।
- प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं उत्तम पुरुष में सर्वनाम के साथ क्रिया–पदों का प्रयोग बताना।
- बच्चों को संस्कृत में छोटे–छोटे वाक्य बनाना सिखाना।

### आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन आदि।

### निर्माणविधि :–

चित्र 1 – सबसे पहले एक चार्ट पेपर पर ऊपर शीर्षक लिखने हेतु थोड़ी सी जगह छोड़कर चित्रानुसार छोटे–छोटे खाने बनाएँगे ।

चित्र 2 – अब इन खानों में चित्रानुसार सबसे किनारे की तरफ प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष,उत्तम पुरुष लिखेंगे तथा ऊपर की तरफ क्रमशः एकवचन,द्विवचन एवं बहुवचन लिखेंगे।

चित्र 3 – अवशेष खानों में चित्रानुसार सर्वनाम शब्दों को लिखेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र 4 – प्रथम पुरुष अर्थात् सः(वह), तौ(वे दोनों), ते(वे सब)।

चित्र 5 – मध्यम पुरुष अर्थात् त्वम् (तुम), युवाम्  (तुम दोनों), यूयम् (तुम सब)।

चित्र 6 – उत्तम पुरुष अर्थात् अहम् (मैं), आवाम् (हम दोनों), वयम् (हम सब)।

चित्र 7 – अब छोटे–छोटे पहले से कटे हुए दो आयताकार चार्ट पेपर के टुकड़ों को आपस में चिपकाकर ऊपर से थोड़ा सा मोड़ देंगे,फिर उसको चार्ट पेपर पर बचे हुए खानों पर चिपका देंगे।

चित्र 8 – अब इस आयताकार टुकड़े पर ऊपर से नीचे क्रमशः एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन के क्रियापदों को लिखेंगे।

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

**प्रयोगविधि :–**

एक सर्वनाम शब्द के साथ 3–3 क्रियापद दिखाए गए हैं। प्रत्येक को अलग–अलग प्रयोग करना बच्चों को सिखाया जाएगा।

**उदाहरण :–**

| | | |
|---|---|---|
| सः पठति। | सः गच्छति। | सः लिखति। |
| तौ पठतः। | तौ गच्छतः। | तौ लिखतः। |
| ते पठन्ति। | ते गच्छन्ति। | ते लिखन्ति। |

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं उत्तम पुरुष के एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन के विभिन्न रूपों को पहचान कर बता लेते हैं।
- बच्चे प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं उत्तम पुरुष में सर्वनाम के साथ क्रिया–पदों का प्रयोग कर लेते हैं।

# सामग्री संख्या :– (5) धावन–प्रतियोगिता

### उद्‌देश्य :–

- संज्ञा और क्रियापद को जोड़कर संस्कृत–वाक्य की रचना करना।
- छोटे–छोटे संस्कृत वाक्यों को बोलने का अभ्यास कराना।

### आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

### निर्माणविधि :–

चित्र 1 – एक मोटे चार्ट–पेपर का आधा हिस्सा लेंगे।

चित्र 2 – चार्ट पेपर को तीन बराबर भागों में मोड़ लेंगे।

चित्र 3 – चार्ट पेपर पर कुल आठ आड़ी(––––––) लाइन खींचेंगे।

चित्र 4 – चित्रानुसार चार्ट को विभाजित कर रेखा खींच लें।

चित्र 5 – पहले हिस्से में प्रतिभागी पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम लिखेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र 6 – दूसरे हिस्से में प्रतिभागी पशु–पक्षियों का चित्र चिपका लेंगे ।

चित्र 7 – तीसरे हिस्से के सभी आठ खानों में क्रिया (धावति) लिखेंगे।

चित्र 8 – दूसरे एवं तीसरे हिस्से में मार्ग को दिखाने के लिए क्रमशः तीर का निशान लगाएँगे एवं समाप्ति की विजयपताका बनाएँगे।

चित्र 9 – दूसरे हिस्से में प्रतिभागियों के चित्र दौड़ने की क्षमता के अनुसार लगा लेंगे। चार्ट के चारों तरफ बॉर्डर बनाकर रंगीन टेप लगाएँगे।

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

चित्र – 9

**प्रयोगविधि :–**

- पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम का उच्चारणाभ्यास कराएँगे।
- संज्ञा शब्द के साथ 'धावति' क्रियापद जोड़कर वाक्य–निर्माण कराएँगे।
- सामग्री को दिखाते हुए इससे संबंधित प्रश्न करेंगे।
- 'जयति' क्रियापद को जोड़ते हुए संस्कृत–वाक्य का उच्चारणाभ्यास कराएँगे।
- 'धावन–प्रतियोगिता' को बच्चों के बीच गतिविधि के रूप में कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे संज्ञा और क्रियापद को जोड़कर छोटे सरल संस्कृत–वाक्यों की रचना कर लेते हैं।
- बच्चे छोटे–छोटे संस्कृत वाक्यों को बोलने का अभ्यास कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (6) प्रश्नवाचक–शब्दाः

**उद्देश्य :–**

- संस्कृत के प्रश्नवाचक शब्दों से परिचित कराना।
- बच्चों के संस्कृत शब्द–भंडार में वृद्धि करना।
- प्रश्नवाचक शब्दों की सहायता से संस्कृत वाक्यों का निर्माण कराना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन आदि।

**निर्माणविधि :–**

चित्र 1 – दफ्ती/कार्ड–बोर्ड/गत्ते का टुकड़ा लेंगे।

चित्र 2 – पेंसिल से प्रश्नवाचक चिह्न की आकृति बनाएँगे।

चित्र 3 – कैंची और कटर की सहायता से बनाई गई आकृति को काटकर अलग कर लेंगे।
चित्र 4 – कटी हुई आकृति के चार टुकड़े कर लेंगे।
चित्र 5 – दफ्ती के कटे हुए टुकड़े को रंगीन कागज पर रखकर पेंसिल से उसके चारों ओर निशान लगाएँगे। फिर एक अन्य रंगीन कागज पर उसी आकृति को रखकर 2 इंच की दूरी पर उसके चारों ओर निशान लगाएँगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र 6 – अब प्रत्येक दफ्ती के टुकड़े पर काटे गए रंगीन कागज को चिपका लेंगे, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

चित्र 7 – प्रत्येक टुकड़े को रिबन की सहायता से जोड़ लेंगे।

चित्र 8 – सभी टुकड़ों को जोड़ने के बाद दूसरी तरफ से भी कागज चिपका लेंगे।

चित्र 9 – अब प्रत्येक टुकड़े पर एक तरफ संस्कृत के प्रश्नवाचक शब्द एवं उसके ठीक पीछे उसका हिन्दी अर्थ लिखेंगे।

चित्र 10 – अब हमारी सामग्री बनकर तैयार है।

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

चित्र – 9

चित्र – 10

**प्रयोगविधि :–**

- बच्चों को प्रश्नवाचक चिह्न की पहचान कराएँगे और बताएँगे कि इस चिह्न का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है।
- सामग्री में लिखे हुए प्रश्नवाचक शब्दों को बोलने और पढ़ने का अवसर देंगे ।
- संस्कृत के प्रश्नवाचक शब्दों के हिन्दी अर्थ सामग्री से ढूँढकर बताने को कहेंगे।
- इन प्रश्नवाचक शब्दों की सहायता से संस्कृत वाक्य बनाने का अभ्यास कराएँगे।
- शिक्षक द्वारा बताया जाएगा कि ये सभी अव्यय हैं। सभी लिंग,वचन,एवं विभक्तियों में प्रयोग करते समय इनका रूप एक जैसा रहता है। बच्चों को इसका अभ्यास कराकर इस कथन की पुष्टि करेंगे।

**अधिमगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे संस्कृत के प्रश्नवाचक शब्दों की पहचान कर लेते हैं।
- प्रश्नवाचक शब्दों की सहायता से छोटे–छोटे संस्कृत वाक्यों का निर्माण कर लेते हैं।

**गतिविधि :–**

उपर्युक्त सामग्रियों की वीडियो साझा करने के उपरान्त प्रतिभागियों का समूह बनाकर आवश्यक स्टेशनरी का वितरण करेंगे। प्रतिभागी शिक्षक समूह में सामग्री का निर्माण करेंगे तथा प्रत्येक समूह से निर्माणविधि एवं प्रयोगविधि का प्रस्तुतीकरण किया जायगा।

**समेकन :–**

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण ढ़ंग से सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा विद्यालय स्तर पर सामग्री के प्रयोगविधि की वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएँगे।

8

# नैतिकता एवं मूल्यबोध

**उद्देश्य :–**

किसी समाज में जिन आदर्शों को महत्व दिया जाता है और जिससे उस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित एवं नियंत्रित होता है उसे समाज का नैतिकता एवं मूल्यबोध कहते हैं। मूल्य का व्यक्ति के आचरण एवं व्यक्तित्व तथा कार्यों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

नैतिकता मानव जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। राष्ट्रीय उत्थान हेतु बच्चों को नैतिकता एवं मूल्यबोध का ज्ञान कराना बहुत ही आवश्यक है। यदि मानव में नैतिकता नहीं होगी तो मानव और पशुओं में भेद कराना कठिन होगा।

नैतिकता एवं मूल्यबोध को समझने के लिए 'बाल–संस्कृत–मंजूषा' में निम्नलिखित सामग्री सम्मिलित की गई है–

1– सुभाषितानि एवं सूक्तय:
2– प्रतिज्ञा

'संदर्भदाता उपर्युक्त शिक्षण सामग्री की निर्माण–विधि एवं प्रयोग–विधि की वीडियो प्रदर्शित करेंगे।

'संदर्भदाता प्रतिभागियों को समूह में बाँटकर पर्चियों (शिक्षण सामग्री का नाम लिखी हुई )को वितरित करेंगे। सभी प्रतिभागियों को प्राप्त शिक्षण सामग्री का निर्माण करने के लिए निर्देशित किया जाएगा तथा सन्दर्भदाता द्वारा यथा आवश्यक सहयोग किया जायेगा।

'सभी समूह बारी–बारी अपने शिक्षण सामग्री का सभी के समक्ष प्रदर्शन, प्रस्तुतीकरण एवं कक्षा कक्ष में प्रयोग के अन्य तरीकों को भी बताएँगे।

**सामग्री का विवरण :–**

## सामग्री संख्या :– (1) सुभाषितानि एवं सूक्तय:

**उद्देश्य :–**

- सुभाषित श्लोकों के द्वारा छात्रों को सदाचरण के प्रति प्रेरित करना।
- संस्कृत–सूक्तियों के माध्यम से बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

**निर्माण–विधि –**

चित्र 1 – सर्वप्रथम मोटे चार्ट पेपर को 22X8 इंच के आकार में काट लेंगे ।

चित्र 2 – चार्ट पेपर पर पेंसिल एवं स्केल की सहायता से दो–दो इंच पर चिह्न लगाकर सीधी रेखा खींचकर, 11 भागों में विभक्त कर लेंगे।

चित्र 3 – चार्ट पेपर को रेखा के ऊपर से आगे–पीछे की ओर स्केल की सहायता से मोड़कर सीढ़ीनुमा आकृति बना लेंगे।

चित्र 4 – चार्ट पेपर के दोनों किनारों को रंगीन टेप से सजाएँगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

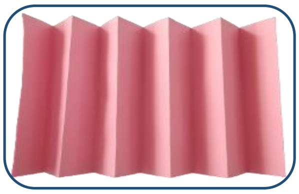

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र 5 – चार्ट पेपर के एक ओर के प्रथम भाग में 'सुभाषितानि' शीर्षक लिख लेंगे।

चित्र 6 – आगे क्रमशः एक भाग में सुभाषित श्लोक एवं अगले भाग में उसका हिन्दी अर्थ लिख लेंगे।

चित्र 7 – चार्ट पेपर के दूसरी ओर के प्रथम भाग में 'सूक्तयः' शीर्षक एवं उसके आगे के भागों में क्रमशः सूक्तियाँ एवं उनके हिन्दी अर्थ लिख लेंगे।

चित्र 8 – इस प्रकार शिक्षण सामग्री 'सुभाषितानि' एवं 'सूक्तयः' तैयार हो जाएगी।

चित्र – 5

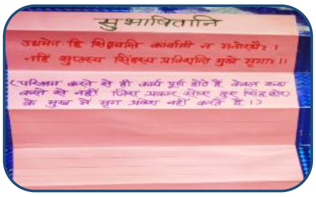


चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

**प्रयोगविधि –**

- शिक्षक 'सुभाषितानि के श्लोकों एवं सूक्तियों का सस्वर वाचन करेंगे एवं छात्रों से अनुकरण वाचन करवाएँगे।
- 'सुभाषितानि' के श्लोकों एवं सूक्तियों का हिन्दी अर्थ भी बताएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे संस्कृत सूक्तियों का अर्थ एवं महत्व बता लेते हैं।
- बच्चे सुभाषित श्लोकों के अर्थ एवं सुभाषितों का महत्व बता लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (2) प्रतिज्ञा

**उद्देश्य :–**

- देशभक्ति की भावना जागृत करना।
- संस्कृत भाषा के प्रति रुचि जागृत करना।
- सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने हेतु प्रेरित करना।

### आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

### निर्माणविधि :–

चित्र 1 – सर्वप्रथम 1 फीट चौड़ी और 1.5 फीट लंबी दफ्ती को काटकर उसी अनुपात में चार्ट पेपर को काटकर उस पर चिपका लेंगे।
चित्र 2 – उस पर पेंसिल से चित्रानुसार आकृति बनाएँगे। आकृति को स्केच से दोहराएँगे।
चित्र 3 – आकृति के अन्दर प्रतिज्ञा की पंक्तियों को लिखेंगे। अब इन पंक्तियों को स्केच से दोहराएँगे।
चित्र 4 – इसे आकर्षक बनाने के लिए पीले रंग से आकृति के मध्य रँगेंगे तथा आकृति के बाहरी भाग को बैगनी रंग से रँगेंगे।
चित्र 5 – अंत में इसके चारों ओर रिबन या रंगीन टेप से किनारा बना देंगे और मोतियों/सितारे या स्टिकर से सजा लेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

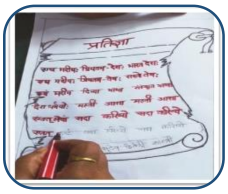
चित्र – 3

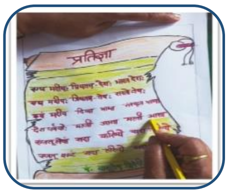
चित्र – 4

चित्र – 5

### प्रयोगविधि :–

- शिक्षक कक्षा में प्रतिज्ञा की पंक्तियों के अंतर्गत आए हुए सभी शब्दों का अर्थ बताकर बच्चों को उच्चारण का अभ्यास कराएँगे।
- प्रतिदिन प्रार्थना–सभा में संस्कृत में प्रतिज्ञा के पंक्तियों का अभ्यास कराया जाएगा

### अधिगम सम्प्राप्ति :–

- बच्चे प्रतिदिन प्रार्थना सभा में प्रतिज्ञा की पंक्तियों का उच्चारणाभ्यास कर लेते हैं।
- बच्चे प्रतिज्ञा में सम्मिलित देशभक्तिपरक वाक्यों का अर्थ बता लेते हैं।

### समेकन :–

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण ढ़ंग से सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा विद्यालय स्तर पर सामग्री के प्रयोग–विधि का वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएँगे।

9

# संस्कृत – सम्भाषण

सम्भाषण का सामान्य अर्थ है – बातचीत अथवा वार्तालाप। सामान्यतः सम्भाषण के माध्यम से ही हम अपने विचारों को दूसरों से प्रकट करते है। सम्भाषण एक ऐसी कला है जो निरन्तर अभ्यास से परिष्कृत होती है। सम्भाषण के माध्यम से हम अपनी बात को बेहतर ढंग से लोगों के समक्ष रख सकते हैं। संस्कृत भाषा में अभ्यास के अभाव में संस्कृत–सम्भाषण आज की परिस्थिति में दुरूह हो गया है। संस्कृत भाषा में बच्चे समान्य संभाषण कर सकें, इसके लिए संस्कृत भाषा किट में वार्तालापः, कक्षाकक्ष के अनुमति वाक्य एवं दिनचर्या सामग्री का निर्माण किया गया है।

- वार्तालापः
- कक्षाकक्ष के अनुमति वाक्य
- दिनचर्या

संदर्भदाता प्रशिक्षण कक्ष में तीनों सामग्रियों को दिखाकर प्रतिभागियों से चर्चा करेंगे। संदर्भदाता एवं प्रतिभागी आपस में सरल–संस्कृत वाक्यों के माध्यम से सम्भाषण करेंगे। इसके अनन्तर संदर्भदाता प्रतिभागियों को तीन समूहों में बाँटकर आवश्यक निर्माण सामग्री वितरित कर एक समूह से वार्तालापः, दूसरे समूह से कक्षाकक्ष के अनुमति वाक्य एवं तीसरे समूह से दिनचर्या सामग्री का निर्माण कराएंगे एवं समय–समय पर आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन देंगे । इसके बाद संदर्भदाता सत्र का समेकन करेंगे।

## सामग्री संख्या :– (1) वार्तालापः

### उद्देश्य :–

- एक शब्द में पूरे वाक्य का अर्थ बोध कराने वाले संस्कृत के वाक्यों को बोलने का अभ्यास कराना।
- संस्कृत शब्दों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना।

### आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

### निर्माण–विधि :–

चित्र 1 – चित्रानुसार आधे चार्ट पेपर को लंबाई में मोड़ कर चिपका लेंगे।

चित्र 2 – रंगीन चार्ट पेपर पर चित्रानुसार शाखा जैसी आकृति बना लेंगे।

चित्र 3 – शाखा की पत्तियों के दोनों ओर संस्कृत शब्द और उनके हिन्दी अर्थ लिख लेंगे।

चित्र 4 – अब इस बनाई गई आकृति को सावधानी से कैंची की सहायता से काट लेंगे।

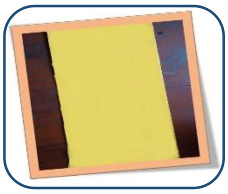

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र 5 – आकृति के ऊपर चौड़े भाग पर शिक्षण सामग्री का शीर्षक 'वार्तालापः' लिखेंगे।

चित्र 6 – काटी गई आकृति का लेमिनेशन करा लेंगे जिससे सामग्री मजबूत और टिकाऊ रहे।

चित्र 7 – अंत में सामग्री को लटकाने हेतु धागा अथवा ऊन की सहायता से हुकनुमा हैंडल बना लेंगे।

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

**प्रयोगविधि :–**

- 'वार्तालापः' के संस्कृत शब्दों का कक्षा–कक्ष में हाव–भाव के साथ बोलने का अभ्यास कराएँगे। जैसे–

| | |
|---|---|
| आगम्यताम् – आइए | गम्यताम् – जाइए |
| उपविश्यताम् – बैठिए | उत्त्थीयताम् – उठिए |
| दीयताम् – दीजिए | गृह्यताम् – लीजिए |
| कथ्यताम् – कहिए | श्रूयताम् – सुनिए |
| पिधीयताम् – बंद कीजिए | उद्घाट्यताम् – खोलिए |
| भक्ष्यताम् – खाइए | पीयताम् – पीजिए |
| आनीयताम् – ले आइए | नीयताम् – ले जाइए |
| पठ्यताम् – पढ़िए | लिख्यताम् – लिखिए |
| क्रियताम् – करिए | त्यज्यताम् – छोड़िए |

गीयताम् – गाइए    वाद्यताम् – बजाइए

### अधिगम सम्प्राप्ति :–

- बच्चे सामान्य व्यवहार में पूरे वाक्य का अर्थ बोध कराने वाले क्रिया पदों को हाव–भाव के साथ बोल लेते हैं जैसे– आगम्यताम्, श्रूयताम, लिख्यताम आदि।

## सामग्री संख्या :– (2) कक्षा–कक्ष के अनुमति–निर्देश वाक्य

### उद्देश्य :–

- बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- कक्षा तथा व्यवहार में प्रयोग होने वाले अनुमति वाक्यों के अभ्यास हेतु प्रेरित करना।

### आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

### निर्माणविधि :–

चित्र 1 – सर्वप्रथम 21X6 इंच के माप का मोटा चार्ट पेपर लेंगे।

चित्र 2 – चार्ट पेपर को तीन–तीन इंच पर निशान लगाकर सीढ़ीनुमा आकृति में मोड़ेंगे।

चित्र 3 – प्रथम खाने में सामग्री का शीर्षक लिखेंगे।

चित्र 4 – छः खानों में संस्कृत भाषा में अनुमति वाक्य एवं उनके हिन्दी अर्थ लिखेंगे ।

चित्र 5 – चार्ट पेपर के दूसरी तरफ भी वाक्य लिखेंगे। चार्ट पेपर के किनारों को रंगीन टेप से सजाएँगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र – 5

- सन्दर्भदाता सामग्री के प्रथम भाग का चित्र दिखाएँ। फिर प्रतिभागियों के साथ अनुमति–निर्देश वाक्यों के संस्कृत वाक्यों का हाव–भाव के साथ शुद्ध–उच्चारण करेंगे एवं प्रतिभागियों से भी हाव–भाव के साथ उच्चारणाभ्यास कराएँगे।

- संस्कृत वाक्यों के हिन्दी अर्थ बताएँगे फिर प्रतिभागियों के साथ क्रमशः संस्कृत वाक्यों का हाव–भाव के साथ उच्चारण कराएँगे एवं साथ–ही साथ उनके हिन्दी अर्थ भी बताएँगे।
- प्रतिभागियों से अनुमति–निर्देश वाक्य बोलते हुए अभिनय कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे कक्षा एवं व्यवहार एवं प्रयोग होने वाले अनुमति–निर्देश वाक्यों का प्रयोग कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (3) दिनचर्या

**उद्देश्य :–**

- दिनचर्या को चित्रों के द्वारा प्रदर्शित करना।
- संस्कृत वाक्यों में दैनिक क्रियाओं को बताना।
- छात्रों को नियमित दिनचर्या का पालन करने हेतु प्रेरित करना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

**निर्माण–विधि :–**

चित्र 1 – सर्वप्रथम पुराने निमंत्रण–पत्र या मोटे रंगीन पेपर को चित्रानुसार पत्ती के आकार में, पाँच पत्तियाँ काट लेंगे ।

चित्र 2 – पत्तियों के किनारों को आकर्षक बनाने के लिए उसके किनारों को रँगेंगे।

चित्र 3 – पहली पत्ती के एक तरफ शीर्षक 'दिनचर्या' तथा दूसरी तरफ दिनचर्या के 8 चित्रों को स्वयं बनाएँगे अथवा कहीं से संकलित कर चिपका लेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र 4 – शेष चार पत्तियों के दोनों ओर, पहली पत्ती के चित्रों से सम्बन्धित दिनचर्या के संस्कृत वाक्य एवं उनके हिन्दी अर्थ को लिखेंगे।

चित्र 5 – सुविधा हेतु अन्य चार पत्तियों के क्रमानुसार एवं चित्रानुसार संकलित करेंगे।

चित्र 6 – सभी पत्तियों के डण्डी वाले भाग को पंच–प्लायर या सुविधानुसार किसी वस्तु से छेद करके उसे रिबन से बाँध लेंगे।

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र – 6

## प्रयोगविधि :–

- प्रशिक्षक दिनचर्या के चित्रों को दिखाते हुए चर्चा करेंगे।
- दिनचर्या के क्रियाकलाप से सम्बन्धित संस्कृत वाक्यों का क्रमशः प्रतिभागियों से उच्चारणाभ्यास कराएँगे।
- दिनचर्या के क्रियाकलाप से सम्बन्धित संस्कृत वाक्यों के हिन्दी अर्थ भी बताएँगे।

## अधिगम सम्प्राप्ति :–

- बच्चे संस्कृत वाक्यों में दैनिक व्यवहार की क्रियाओं को बता लेते हैं।
- संस्कृत वक्यों का व्यवहार नियमित दिचर्या में कर लेते हैं।

## गतिविधि :–

उपर्युक्त सामग्रियों की वीडियो साझा करने के उपरान्त प्रतिभागियों का समूह बनाकर आवश्यक स्टेशनरी का वितरण करेंगे। प्रतिभागी शिक्षक समूह में सामग्री का निर्माण करेंगे तथा प्रत्येक समूह से निर्माण–विधि एवं प्रयोग–विधि का प्रस्तुतीकरण किया जायगा।

## समेकन :–

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण ढ़ंग से सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा विद्यालय स्तर पर सामग्री के प्रयोगविधि की वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएँगे।

10

## अभिनय क्षमता का विकास

अभिनय करने की प्रवृत्ति बचपन से ही मनुष्य के अन्दर रहती है। अभिनय का मुख्य उद्देश्य होता है किसी विषयवस्तु के भाव को श्रोता तक रोचक ढंग से पहुँचा देना। बच्चे जब किसी सामग्री को साक्षात् अपने सामने नाटकीय प्रस्तुति के साथ देखते हैं तो एकाग्रचित्त होकर उस प्रस्तुति से अपने को जुड़ा महसूस करने लगते हैं जिससे प्रस्तुत की जा रही सामग्री उन्हें आसानी से समझ में आ जाती है। बच्चों को संस्कृत भाषा में सीखी गयी पाठ्यवस्तु को स्थाई बनाने हेतु अभिनयात्मक गतिविधि के लिए निम्नांकित सामग्री का विकास किया गया है–

### सामग्री संख्या :– (1) अंगुलिपुत्तलिका (फिंगर पपेट)

**उद्देश्य :–**

- फिंगर पपेट का प्रयोग कर संस्कृत कक्षा को रोचक बनाना।
- खेल–खेल में संस्कृत वाक्यों के उच्चारण का अभ्यास कराना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण–पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

**निर्माण–विधि –**

- चित्र 1 – फ्लैक्स शीट अथवा बकरम को चार–चार इंच के 5 भागों में कैंची से काट लेंगे।
- चित्र 2 –कटे हुए वर्गाकार शीट के ऊपर मध्य में जीव–जन्तुओं (हाथी, चूहा, मेढक, बिल्ली और शेर) के चित्र चिपका लेंगे।
- चित्र 3 – चिपकाए हुए पशु के चित्र के दोनों ओर के बकरम अथवा फ्लैक्स शीट को चित्रानुसार काट लेंगे।
- चित्र 4 – बकरम अथवा फ्लैक्स शीट के नीचे के शेष भाग को अंगुली अथवा लकड़ी के चारों ओर गोलाकार मोड़कर सेलो टेप अथवा फेविकोल से चिपका लेंगे।
- चित्र 5 – इसी प्रकार पाँचों फिंगर पपेट तैयार कर लेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र – 5

**प्रयोगविधि–**

- तत्पश्चात् प्रतिभागियों को फिंगर पपेट देकर पात्रों के संवादों का हाव–भाव के साथ अभिनय करवाएंगे।
- आवश्यकतानुसार अन्य फिंगर पपेट भी बना सकते हैं।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- छोटे–छोटे संवादों को संस्कृत भाषा में बोल लेते हैं।
- खेल–खेल में संस्कृत वाक्यों के उच्चारण का अभ्यास कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (2) मुखौटा

**उद्देश्य :–**

- संस्कृत भाषा को सरल एवं रुचिपूर्वक सीखने के लिए प्रेरित करना।
- छोटे–छोटे संस्कृत वाक्यों में वार्तालाप करने की दक्षता विकसित करना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) कपड़ा, बकरम, चार्ट पेपर पर खरगोश, शेर, कछुआ के चेहरे का चित्र बनाएँगे।

**निर्माणविधि –**

चित्र 1 – चित्र को विविध रंगों से रँगेंगे।

चित्र 2 – बनी हुई आकृति को चित्रानुसार सावधानीपूर्वक काटेंगे।

चित्र 3 – कटी हुई आकृति के पीछे पतली दफ्ती या मोटा कागज चिपका लेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र 4 – प्राप्त आकृति के नेत्र के गोले को सावधानीपूर्वक काट कर अलग कर लेंगे।

चित्र 5 – आकृति के दोनों ओर डोरी बाँध लेंगे अब मुखौटा बन कर तैयार हो गया।

चित्र 6 – मुखौटे से संबन्धित संस्कृत–संवाद मुखौटे के पीछे लिखेंगे।

**प्रयोगविधि–**

- संस्कृत संवादों के उच्चारण का अभ्यास कराएँगे।
- बच्चों/प्रतिभागियों को मुखौटे पहनाकर अभिनय एवं संवाद का अभ्यास कराएँगे।
- मुखौटे की सहायता से संस्कृत की अन्य कहानियों का भी हावभाव के साथ अभिनय कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे संस्कृत भाषा को सरल एवं रुचिपूर्वक ढंग सीखकर छोटे–छोटे संवादों को बोल लेते हैं।
- छोटे–छोटे संस्कृत वाक्यों के माध्यम से सामान्य वार्तालाप संस्कृत भाषा में कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (3) मनोभावाः

**उद्देश्य :–**

- चित्रों की सहायता से विभिन्न मनोभावों से बच्चों का परिचय कराना।
- बच्चों को विभिन्न मनोभावों के संस्कृत शब्दों को बताना।
- बच्चों से विभिन्न मनोभावों की अभिव्यक्ति कराना।

**आवश्यक सामग्री :–**

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

**निर्माण–विधि :–**

चित्र 1 – दफ्ती का 4 इंच चौड़ा एवं 9 इंच लम्बा दो टुकड़ा ले लेंगे। दोनों टुकड़ो को रंगीन चार्ट पेपर, रंगीन कागज एवं टेप की सहायता से सजा लेंगे ।

चित्र 2 – दोनों टुकड़ों को एक चौड़ाई में टेप की सहायता से जोड़ लेंगे जिससे वे एक दूसरे के ऊपर बंद हो सकें और खुल सकें। (चित्रानुसार)

चित्र 3 – मोटे चार्ट पेपर के 6 सेंटीमीटर चौड़े और 12 सेंटीमीटर लम्बे ,6 मनोभावों के लिए 6 टुकड़े बनाएँगे। इन्हे बीच से मोड़ देंगे।

चित्र 4 – अब सभी टुकड़ों पर मनोभावों के चित्र बना लेंगे या कहीं से काट कर चिपका देंगे एवं उसके पीछे उसी मनोभाव से सम्बन्धित वाक्य लिख देंगे । जैसे–बालिका के रोते हुए चित्र के साथ 'रोदनम्' शब्द तथा पीछे 'मा कुरु रोदनम्' लिखेंगे। इसी तरह सभी मनोभावों के लिए यही प्रक्रिया अपनाएँगे।

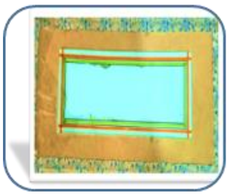

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र 5 – 1 सेंटीमीटर चौड़ी और 4 सेंटीमीटर लम्बी मोटे पेपर की 6 पट्टियाँ बनाएँगे।

चित्र 6 –अब मनोभावों के खुले भाग की ओर चित्र के अनुसार दोनों टुकड़ों को जोड़ते हुए चिपका देंगे।

चित्र 7 – 1 सेंटीमीटर चौड़ी एवं 2 सेंटीमीटर लम्बी मोटे कागज की 6 पट्टियाँ बनाएंगे।

चित्र 8 – अब इन पट्टियों को मनोभाव के पिछले भाग में बीचो–बीच चिपका देंगे। इसी तरह आगे के भाग के लिए 1 सेंटीमीटर चौड़ी एवं 5 सेंटीमीटर लम्बी 6 पट्टियों को मनोभावों को आगे वाले भाग से जोड़ देंगे।

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

चित्र 9 – 1 सेंटीमीटर चौड़ी और 4 सेंटीमीटर लम्बी, 6 पट्टियों को अंगुली गोलाकार करते हुए मनोभावों के लिए निशान लगे सभी 6 जगहों पर चिपका देंगे। जिसमें से चित्र वाली पट्टी आसानी से खीचीं जा सके।

चित्र 10 – अब मनोभावों को दफ्ती के बीचो–बीच सभी चिह्नित स्थानों पर रख कर पिछली पट्टी को चिपका देंगे एवं अगली पट्टी को गोलाकार पट्टी में डाल देंगे।

चित्र 11 – आगे वाली पट्टी जो कागज के टुकड़े पर खिसक रही है, उस पर 1 इंच वर्गाकार अँगूठे के निशान वाली पट्टी चिपका देंगे जिससे पट्टी को बाहर खींचने में आसानी होगी।

चित्र 12 – अब यह उपकरण सामग्री कक्षा– कक्ष में शिक्षण या अधिगम के लिए तैयार है।

चित्र – 9

चित्र – 10

चित्र – 11

चित्र – 12

**प्रयोगविधि :–**

- शिक्षण उपकरण पर बने हुए भावों को दिखाते हुए उस पर चर्चा करेंगे।
- प्रत्येक मनोभावों के संस्कृत उच्चारण का अभ्यास कराएँगे।

- मनोभावों का मूक अभिनय कराकर उसका नाम पूछेंगे।
- उपकरण के पीछे लिखे संस्कृत वाक्यों का उच्चारण भी कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- चित्रों की सहायता से विभिन्न मनोभावों को बच्चों अभिनय द्वारा व्यक्त कर लेते हैं।
- बच्चे विभिन्न मनोभावों के संस्कृत नाम बता लेते हैं।

**गतिविधि :–**

संदर्भदाता प्रशिक्षण कक्ष में पपेट, मुखौटा, मनोभावाः से सम्बन्धित किट पर बातचीत करेंगे तथा सामग्री की निर्माण–विधि एवं प्रयोग–विधि का वीडियो प्रदर्शित करके प्रतिभागियों से चर्चा करेंगे। संदर्भदाता हाव–भाव के साथ पपेट एवं मुखौटे की निर्मित सामग्री का प्रयोग करते हुए उनके संवाद बोलेंगे एवं प्रतिभागियों को भी उक्त सामग्रियों के साथ संवाद बुलवाएंगे। मनोभावाः की पट्टिका के माध्यम से विभिन्न मनोभावों का अभिनय करेंगे तथा प्रतिभागियों से बारी–बारी से कराएंगे तथा इसके अनन्तर प्रतिभागियों का समूहवार आवश्यक सामग्री देंगे।

प्रथम समूह से पपेट दूसरे समूह से मूखौटा तथा तीसरे समूह से मनोभावाः से सम्बन्धित किट सामग्री को बनाने की गतिविधि का कार्य कराया जायेगा। संदर्भदाता समस्त समूह के पास जाकर आवश्यक दिशा–निर्देश देते रहेंगे।

उपर्युक्त सामग्रियों का वीडियो साझा करने के उपरान्त प्रतिभागियों का समूह बनाकर आवश्यक स्टेशनरी का वितरण करेंगे। प्रतिभागी शिक्षक समूह में सामग्री का निर्माण करेंगे तथा प्रत्येक समूह से निर्माण–विधि एवं प्रयोग–विधि का प्रस्तुतीकरण किया जायगा।

**समेकन :–**

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण ढ़ंग से सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा

11

# मूल्यांकन

बाल संस्कृत मञ्जूषा की सभी शिक्षण सामग्रियाँ रुचिकर मनोरंजक, ज्ञानवर्धक एवं गतिविधि आधारित हैं। ये शिक्षण सामग्रियाँ संस्कृत भाषा कौशल विकसित करने में सहायक होंगी। इनके प्रयोग से बच्चे संस्कृत भाषा में रुचि लेंगे और सीखने के लिए तत्पर होंगे। इसके साथ ही साथ बाल–संस्कृत–मंजूषा में कुछ शिक्षण सामग्रियाँ ऐसी भी सम्मिलित हैं जिनके द्वारा किसी विषय वस्तु की शिक्षण प्रक्रिया के उपरांत बच्चों में उसके अधिगम स्तर को जाँचने का कार्य किया जा सकता है। जैसे–

- वीडियो दिखाने के बाद निर्माण सामग्री वितरित कर मूल्यांकन उपकरणों का निर्माण कराया जायेगा तथा निर्मित सामग्री का प्रस्तुतिकरण कराने के बाद सत्र का समेकन किया जायेगा।

संदर्भदाता उपर्युक्त शिक्षण सामग्री की वीडियो क्रमशः एक–एक करके दिखाएंगे एवं प्रतिभागियों से यह गतिविधि कराएंगे।

## सामग्री संख्या :– (1) डिब्बे में डिब्बा

चित्र 1 – 1–9 तक संस्कृत गिनती का अभ्यास कराना।

- खेल के माध्यम से कक्षा का वातावरण रोचक बनाना।
- चित्र 1 – परिवेशीय वस्तुओं के संस्कृत नामों से परिचित कराना।
- चित्र 1 – डिब्बों में वर्णों (रंगों) की पहचान तथा उनका संस्कृत नाम का अभ्यास कराना।
- परिवेशीय वस्तुओं और उनके रंगों तथा संख्याओं के अनुसार संगत डिब्बों में उसी रंग की तीलियों को लगाने की रोचक गतिविधि कराना।

### आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन, सजावट की सामग्री (मोतियाँ, सितारे, स्टिकर) इत्यादि।

### निर्माणविधि :–

चित्र 1 – सबसे पहले हम पुराने निमंत्रण पत्र या मोटा रंगीन पेपर लेंगे।

चित्र 2 – खुला घनाकार डिब्बा बनाने के लिए हम पाँच फलक वाली एक घनाकर आकृति बनाएँगे।

चित्र 3 – सबसे पहले हम छोटा डिब्बा बनाएँगे जिसके लिए 2 इंच के 5 वर्ग चित्रानुसार आकृति में बनाएँगे।

चित्र 4 – आकृति के अनुसार दफ्ती काटकर,चिपकाकर उसे खुले डिब्बे का स्वरूप देंगे।

चित्र 5 – इस प्रकार हम छोटे से बड़े क्रम में 1–9 तक की संख्या में कुल 9 डिब्बे बनाएँगे। प्रत्येक डिब्बे का निर्माण करते समय उसके आकार में क्रमशः 0.25 सेन्टीमीटर की वृद्धि करेंगे।

चित्र – 1

चित्र – 2

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र 6 – सभी 9 डिब्बों के निचले तल वाले फलक में 1–9 तक संख्या के आधार पर छेद करेंगे, जिससे इसमे उतनी संख्या की तीलियाँ डाली जा सके।

चित्र 7 – संख्या और रंगों के अनुसार डिब्बों पर चित्र बनाएँ या चिपकाएँ।

चित्र 8 – अब इस डिब्बे के बाहरी फलक पर संख्या और रंग के अनुसार चित्र बना लेंगे या पुरानी किताब से काटकर चिपका देंगे।

चित्र 9 –एक छोटा ढक्कन वाला डिब्बा हम तैयार करेंगे,जिसमें तीलियों को सुरक्षित रखा जा सके।

चित्र 10 – अब आपके सामने सभी 9 डिब्बे तैयार हैं जिससे परिवेशीय वस्तुओं और उनके रंगों तथा संख्याओं के अनुसार संगत डिब्बों में उसी रंग की तीलियों को लगाने की रोचक गतिविधि कराई जा सकती है।

चित्र – 6

चित्र – 7

चित्र – 8

चित्र – 9

चित्र – 10

**प्रयोगविधि–**

- सर्वप्रथम शिक्षक/संदर्भदाता बच्चों/प्रतिभागियों को वर्णों तथा संख्या ज्ञान से भली भाँति परिचित करा दें। इन डिब्बों को 9 बच्चों/प्रतिभागियों में वितरित करके उनसे डिब्बों पर बने चित्र की संख्या संस्कृत में यथा एकम्, द्वे, त्रीणि, चत्वारि इत्यादि संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हुए बताएँ व बच्चों से भी अभ्यास करवाएँ।
- प्रत्येक डिब्बों पर बने चित्र के रंगों का संस्कृत नाम बताते हुए उच्चारणाभ्यास करवाएं साथ ही इस रंग की अन्य वस्तुओं के बारे में पूछें।

- डिब्बों पर बने छिद्र में उसी रंग की तीलियाँ बच्चों/प्रतिभागियों से लगवाएँ तथा संस्कृत गिनती का अभ्यास कराएँ।
- डिब्बों पर बने चित्र के संस्कृत नामों का भी अभ्यास कराएँ।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- परिवेशीय वस्तुओं के संस्कृत नामों को बोल लेते हैं।
- डिब्बों में वर्णों (रंगों) को पहचान कर उनके संस्कृत नाम बोल लेते हैं।
- परिवेशीय वस्तुओं और उनके रंगों तथा संख्याओं के अनुसार संगत डिब्बों में उसी रंग की तीलियों को लगाने की रोचक गतिविधि आसानी से कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (2) लूडोक्रीड़ा

**उद्देश्य :–**

- छात्रों/प्रतिभागियों के संस्कृत शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
- फल, फूल, सब्जी तथा वृक्ष के संस्कृत शब्दों को बताना।
- खेलविधि द्वारा संस्कृत के प्रति रुचि उत्पन्न कराना।
- दैनिक जीवन में संस्कृत शब्दों के प्रयोग हेतु प्रेरित करना।
- संस्कृत के अधिकाधिक क्रिया शब्दों से परिचित कराना।

**निर्माणविधि –**

चित्र 1 – सर्वप्रथम दफ्ती से 1 वर्ग फीट का एक टुकड़ा और उसी माप का रंगीन चार्ट पेपर काटकर आपस में चिपका लेंगे।

चित्र 2 – सफेद वर्गाकार पेपर पर पेंसिल, पेन और स्केल की सहायता से लूडो–खेल शीट के समान रेखाचित्र खींच लेंगे या कहीं से संकलित कर लेंगे।

चित्र 3 – रेखाचित्र को हरे, नीले, लाल एवं पीले रंगों से लूडो शीट के समान रँगेंगे।

चित्र 4 – रंगीन रेखाचित्र के पीले हिस्से के प्रारम्भिक बिन्दु पर 'फलम् ' तथा उसके आगे आने वाले खानों में, एक खाने का अन्तर देते हुए विभिन्न प्रकार के फलों के नाम यथा– आम्रम्, सेवम्, नारंगम् आदि लिखेंगे।

चित्र 5 – इसी प्रकार लाल हिस्से के प्रारम्भिक बिन्दु पर 'पुष्पम् ' तथा उसके आगे आने वाले खानों में, एक खाने का अन्तर देते हुए विभिन्न प्रकार के फूलों के नाम यथा– कमलम्, चम्पकम्, पाटलम् आदि लिखेंगे।

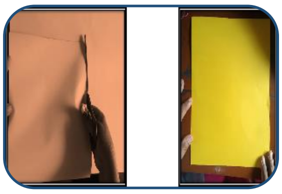
चित्र – 1

चित्र – 2

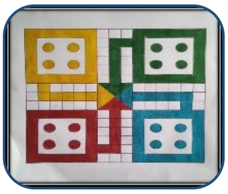
चित्र – 3

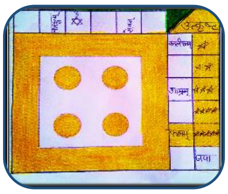
चित्र – 4

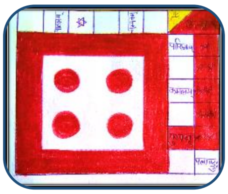
चित्र – 5

चित्र 6 – इसी प्रकार हरे हिस्से के प्रारम्भिक बिन्दु पर 'वृक्षः' तथा उसके आगे आने वाले खानों में, एक खाने का अन्तर देते हुए विभिन्न प्रकार के वृक्षों के नाम यथा– आम्रवृक्षः, वटवृक्षः, नारिकेलवृक्षः आदि लिखेंगे।

चित्र 7 – इसी प्रकार नीले हिस्से के प्रारम्भिक बिन्दु पर 'शाकम्' तथा उसके आगे आने वाले खानों में, एक खाने का अन्तर देते हुए विभिन्न प्रकार के सब्जियों के नाम यथा– आलुः, पटोलः, पनसः आदि लिखेंगे।

चित्र 8 – लूडोक्रीडा शीट के केन्द्र पर जहाँ चारों रंग एक साथ त्रिभुज के आकार में मिले हैं, उन त्रिभुजों में उत्कृष्टम् लिखेंगे।

चित्र 9 – तैयार लूडोक्रीडा शीट को आकर्षक बनाने के लिए वर्गाकार चार्ट पेपर पर चिपकाकर किनारों पर टेप लगा लेंगे।

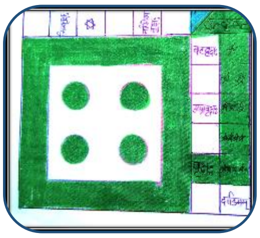
चित्र – 6

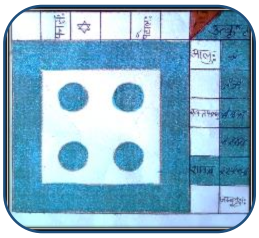
चित्र – 7

चित्र – 8

चित्र – 9

### प्रयोगविधि–

- लूडोक्रीडा खेलते समय शिक्षक/संदर्भदाता छात्रों/प्रतिभागियों से खानों में आने वाले संस्कृत शब्दों की पहचान कराते हुए उच्चारणाभ्यास कराएँगे।
- संस्कृत शब्दों को अभ्यासपुस्तिका पर लिखने को कहेंगे एवं खेल समाप्ति के पश्चात् फल, फूल, सब्जी एवं वृक्षों के नामों का वर्गीकरण कराएँगे।

### अधिगम सम्प्राप्ति :–

- बच्चे खेल–खेल में संस्कृत वाक्यों का उच्चारण कर लेते हैं।
- फल, फूल, सब्जी तथा वृक्ष के संस्कृत शब्दों के नाम बता लेते है।।
- दैनिक जीवन में संस्कृत शब्दों का प्रयोग कर लेते हैं।
- संस्कृत के अधिकाधिक क्रिया शब्दों को समझ कर बोल लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (3) साँप–सीढ़ीक्रीड़ा

### उद्देश्य :–

- छात्रों के संस्कृत शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
- फल, फूल, सब्जी तथा वृक्ष के संस्कृत शब्दों को बताना।
- खेलविधि द्वारा संस्कृत के प्रति रुचि उत्पन्न कराना।
- दैनिक जीवन में संस्कृत शब्दों के प्रयोग हेतु प्रेरित करना।
- संस्कृत के अधिकाधिक क्रिया शब्दों से परिचित कराना।

**निर्माण–विधि :–**

चित्र 1 – सर्वप्रथम चार्ट पेपर एवं दफ्ती से एक–एक वर्ग फीट का टुकड़ा काट कर आपस में चिपका लेंगे।

चित्र 2 – पेंसिल, पेन और स्केल की सहायता से साँप–सीढ़ी खेल शीट के समान पेपर शीट पर रेखाकृति खीचेंगे जिसमें 100 खाने स्पष्ट रूप से दिखाई दें।

चित्र 3 – सभी खानों में 1–100 तक की संख्याओं का अंकन करेंगे।

चित्र 4 – अंकन के पश्चात् साँप–सीढ़ी खेल शीट के समान खानों के ऊपर जगह–जगह साँप और सीढ़ी का चित्र बनाएँगे।

चित्र – 1

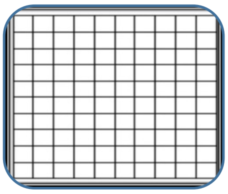

चित्र – 2

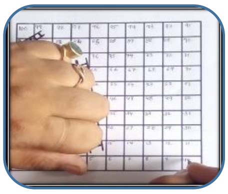

चित्र – 3

चित्र – 4

चित्र 5 – सभी खानों में संस्कृत के विभिन्न क्रिया शब्दों को लिखेंगे।

चित्र 6 – सभी खानों को साँप–सीढ़ी खेल के चित्र के समान विभिन्न रंगों से रँगेंगे।

चित्र 7 – साँप–सीढ़ी क्रीडा उपकरण के चारों किनारों पर रंगीन टेप लगा लेंगे।

चित्र – 5

चित्र – 6

चित्र – 7

**प्रयोगविधि–**

- साँपसीढ़ी–क्रीडा खेलते समय शिक्षक/संदर्भदाता छात्रों/प्रतिभागियों से खानों में आने वाले संस्कृत क्रिया शब्दों की पहचान कराते हुए उच्चारणाभ्यास एवं अभिनय कराएँगे।
- संस्कृत क्रिया शब्दों के उच्चारण के साथ–साथ उन्हें अभ्यास पुस्तिका पर लिखने के लिए कहेंगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे खेल विधि द्वारा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तओं, फूलों, फलों सब्जियों, पेड़ों के नाम संस्कृत में बता लेते हैं।
- अधिक से अधिक संस्कृत क्रिया पदो का प्रयोग कर लेते हैं।

## सामग्री संख्या :– (4) आओ मित्र ! जोड़ें चित्र

### उद्देश्य :–

- कार्ड पर चित्रित सम्पूर्ण आकृति को देखते हुए कटे हुए छोटे टुकड़ों को व्यवस्थित क्रम में लगाते हुए सम्पूर्ण आकृति को बनाना तथा उनके नाम संस्कृत में बोलने का अभ्यास कराना।
- तर्कक्षमता एवं कल्पनाशक्ति का विकास कराना।

### आवश्यक सामग्री :–

दफ्ती या पुराने निमंत्रण – पत्र, सफेद कागज, चार्ट पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच पेन, कैंची, कटर, पेंसिल एवं रबर, रिबन इत्यादि।

### निर्माणविधि :–

चित्र 1 – A 4 साइज़ के दो पेपर पर खरगोश का समान आकृति में चित्र बनाएँगे या चिपकाएँगे।

चित्र 2 – दोनों चित्रों को A 4 साइज़ के मोटे कागज अथवा दफ्ती पर चिपकाएँगे।

चित्र 3 –एक चित्र को चार–पाँच टुकड़ों में चित्रानुसार काट लेंगे।

चित्र – 1

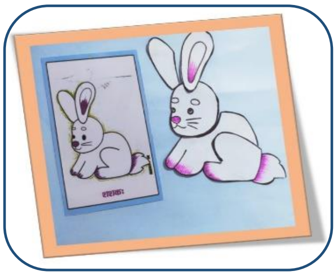

चित्र – 2

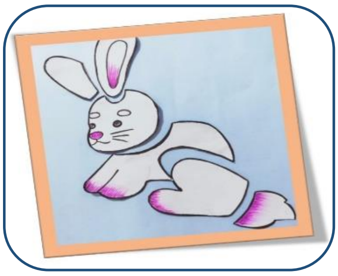

चित्र – 3

चित्र 4 – A 4 साइज़ के कागज वाले दूसरे चित्र को रंगो एवं रंगीन टेप का प्रयोग करते हुए आकर्षक बना लेंगे।

चित्र 5 – चित्र के नीचे खरगोश का संस्कृत में नाम 'शशकः' लिखेंगे।

चित्र 6 – इसी प्रकार हाथी, तोता और मोर के चित्रों को भी दो प्रतियों में बनाएँगे।

चित्र – 4

चित्र – 5

चित्र – 6

**प्रयोगविधि :–**

- कक्षा शिक्षण में इस सामग्री का प्रयोग करते समय बच्चों/प्रतिभागियों के चार समूह बनाकर, प्रत्येक समूह में एक कार्ड और उस कार्ड पर बने चित्र के टुकड़े वितरित करेंगे।
- कार्ड को देखते हुए टुकड़ों को जोड़ कर चित्र पूरा करने को कहेंगे।
- चित्र के संस्कृत नाम का अभ्यास कराएँगे।

**अधिगम सम्प्राप्ति :–**

- बच्चे विभिन्न टुकड़ों का योजित कर पूर्ण चित्र का निर्माण कर संस्कृत नामों का बता लेते हैं।

**गतिविधि :–**

उपर्युक्त सामग्रियों की वीडियो साझा करने के उपरान्त प्रतिभागियों का समूह बनाकर आवश्यक स्टेशनरी का वितरण करेंगे। प्रतिभागी शिक्षक समूह में सामग्री का निर्माण करेंगे तथा प्रत्येक समूह से निर्माणविधि एवं प्रयोगविधि का प्रस्तुतीकरण किया जायगा।

**समेकन :–**

प्रस्तुतीकरण के उपरान्त संदर्भदाता सामग्रियों की सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा को रुचिपूर्ण ढ़ंग से सिखाने पर विस्तृत चर्चा करते हुए सत्र का समेकन करेंगे तथा विद्यालय स्तर पर सामग्री के प्रयोगविधि की वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएँगे

# समापन

- पश्च आकलन प्रपत्र वितरण सम्पूर्ति एवं संग्रहण ।
- 4–5 प्रतिभगियों से फीडबैक प्राप्त करना।
- फीडबैक के आधार पर आवश्यकतानुसार सामान्य चर्चा।
- जनपद स्तर पर प्रशिक्षण हेतु आवश्यक निर्देश एवं पुनर्बलन।
- प्रमाण–पत्र वितरण।
- समापन।

# परिशिष्ट

## 1- पूर्व आकलन प्रपत्र

प्रश्न 1 संस्कृत शब्द नहीं है-

क. सरला | ख. पुस्तकम्
ग. राम | घ. राधिका

प्रश्न 2 जो अलग है उस पर घेरा लगाइए।

क. आम्रम् | ख. पटोलः
ग. द्राक्षा | घ. कदलीफलम्

प्रश्न 3 उचित क्रियापद का चयन कर वाक्य पूरा कीजिए। (सन्ति, अस्ति, अस्मि, स्तः)

अहं शिक्षकः/शिक्षिका..................................................................

प्रश्न 4 अशुद्ध वाक्य है-

क. माता वदति । | ख .बालकः लिखति।
ग. छात्रा पठन्ति । | घ. अजा चरति।

प्रश्न 5 संख्या 10 की संस्कृत है -

क. दशम् | ख .दस
ग. दशः | घ. दश

प्रश्न 6 संस्कृत भाषा किट विषयक प्रशिक्षण से क्या अभिप्राय है?

उत्तर————————————————————————————————————————

—————————————————————————————————————————————

——————————————

प्रश्न 7. संस्कृत सिखाने हेतु आप कौन-कौन से तरीके अपनाते हैं?

उत्तर————————————————————————————————————————

—————————————————————————————————————————————

——————————————

प्रश्न 8. प्राथमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण में सर्वाधिक प्रभावी हो सकता है?

क. रंगीन चित्र कार्ड-पोस्टर्स | ख.. लोक कथाओं को सुनाना
ग. अखबार वाचन | घ. अखबार पठन

प्रश्न 9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संस्कृत भाषा संबंधी कोई दो अनुशंसाएँ लिखिए–

उत्तर————————————————————————————————————————

—————————————————————————————————————————————

——————————————

प्रश्न 10. इस प्रशिक्षण से आपकी क्या अपेक्षाएं हैं?

उत्तर————————————————————————————————————————

—————————————————————————————————————————————

—————————————————————————————————————————————

## 2- पश्च आकलन प्रपत्र

प्रश्न 1. आपके अनुसार यह प्रशिक्षण कितने दिन का होना चाहिए और क्यों?

उत्तर---------------------------------------------------------------------------------------------------------------

---------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संस्कृत भाषा संबंधी अनुशंसाएं हैं -

उत्तर---------------------------------------------------------------------------------------------------------------

---------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 3. संस्कृत किट का उद्देश्य है-

उत्तर---------------------------------------------------------------------------------------------------------------

---------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 4. संस्कृत किट में और क्या सामग्री होनी चाहिए और क्यों?

उत्तर---------------------------------------------------------------------------------------------------------------

---------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 5. सामग्री के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ।

| | | संतोषजनक | उत्तम | अति उत्तम |
|---|---|---|---|---|
| 1. | प्रश्नवाचक शब्दाः | | | |
| 2. | फ्लैश कार्ड | | | |
| 3. | आनंदस्य पाठशाला | | | |
| 4. | वार्तालापः | | | |
| 5. | मनोभावाः | | | |

प्रश्न 6. 'अ' वर्ण से शुरू होने वाले कोई दो संस्कृत शब्द लिखिए-

उत्तर---------------------------------------------------------------------------------------------------------------

------------------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 7. 'मम कुटुंम्बः' सामग्री में लिखे संबंधियों के नाम लिखिए-

उत्तर---------------------------------------------------------------------------------------------------------------

---------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 8. संस्कृत भाषा किट में कुल कितनी सामग्रियाँ हैं प्रश्न 5 के अतिरिक्त किन्हीं पाँच के नाम लिखिए-

उत्तर---------------------------------------------------------------------------------------------------------------

---------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 9 संस्कृत किट में कौन-सी सामग्री आपको सबसे अच्छी लगी और क्यों?

उत्तर---------------------------------------------------------------------------------------------------------------

------------------------------------------------------------------------------------------------------------

प्रश्न 10. संस्कृत में पाँच वाक्य लिखिए–

उत्तर---------------------------------------------------------------------------------------------------------------

------------------------------------------------------------------------------------------------------------

## 3. प्रशिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण बातें

### सुगमकर्ता प्रशिक्षण के दौरान निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेंगे–

- प्रशिक्षण कक्ष सुरुचिपूर्ण एवं व्यवस्थित हो, कक्ष की पर्याप्त साफ–सफाई हो एवं दीवारों पर सम्बंधित पोस्टर लगे हों।
- कक्ष में पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- प्रतिभागियों की संख्या कक्ष के क्षेत्रफल के अनुरूप हो जिससे प्रतिभागियों को विभिन्न गतिविधियों को करने के लिए पर्याप्त स्थान मिल सके।
- बैठक व्यवस्था लचीली हो।
- सुगमकर्ता श्यामपट्ट कार्य करते समय बोलकर लिखें तथा इस प्रकार खड़े हों कि श्यामपट्ट सभी को दिखाई दे।
- प्रशिक्षण के दौरान काम आने वाली सामग्रियाँ प्रतिभागियों की संख्या के अनुरूप पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों।
- प्रत्येक सत्र हेतु निर्धारित समय सीमा का ध्यान रखा जाए। सुगमकर्ता सत्र प्रारम्भ करने हेतु निर्धारित समय से थोड़ा पहले ही प्रशिक्षण स्थल पर पहुँच जाएँ, जिससे सत्र समय से प्रारम्भ किया जा सके।
- सुगमकर्ता प्रतिभागियों से सदैव शालीन व्यवहार करें, सभी प्रतिभागियों को बोलने का अवसर दें तथा उनकी बात को धैर्यपूर्वक सुनें।
- समूह कार्य कराते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि इसमें सभी प्रतिभागी सम्मिलित हों और सभी को समान अवसर प्राप्त हो।
- व्यर्थ की चर्चा से बचें क्योंकि समय मूल्यवान है।
- सुगमकर्ता द्वारा सत्र के पहले ही सत्र की तैयारी एवं रणनीति बना ली जाए।
- सुगमकर्ता स्वयं को भी प्रतिभागी की तरह ही माने अपने को अलग दिखाने का प्रयास न करें।
- प्रशिक्षण समाप्ति के बाद प्रशिक्षण की रिपोर्ट तैयार करें तथा सामग्रियों को व्यवस्थित कर लें, जिससे कि वे अगले प्रशिक्षण में काम आ सकें।
- समय–समय पर वातावरण को सहज बनाने के लिए मनोरंजक गतिविधियों का संचालन भी करें।
- सत्र के प्रारम्भ में पूर्व दिवसों के सत्र / सत्रों का पुनरावलोकन प्रतिवेदन के माध्यम से कराएं।

## 4. प्रशिक्षण के सामान्य नियम/निर्देश

- हम कम से कम शब्दों /वाक्यों में अपनी बात कहेंगे।
- हम विषयांतर होने से बचेंगे। छा जाने के लोभ से भी बचेंगे।
- हम मोबाइल के साइलेंट करके ही कक्षा में बैठेंगे/अपरिहार्य स्थिति में कक्ष से बाहर जाकर बात कर तुरंत अंदर आ जाएंगे।
- हम सभी में कोई वक्ता या श्रोता नहीं होगा। सब बोलेंगे और सब सुनेंगे किंतु जब एक बोलेगा, सब सुनेंगे। बोलने में हम अपनी बारी की प्रतीक्षा करेंगे।
- छोटे–बड़े ग्रुप में प्रत्येक सत्र में कार्य होगा जिसका प्रस्तुतीकरण बड़े समूह में होगा जिसमें हम सबकी प्रतिभागिता अनिवार्य होगी।
- प्रायः समूह कार्य जनपदवार होगा और समूह में बनी समाग्री हम सभी प्रशिक्षक अपने साथ ले जायेंगे जिसका उपयोग जनपद में आयोजित प्रशिक्षण में करेंगे।
- सत्र का आरंभ प्रातः 10 बजे होगा हम सभी प्रतिभागी गण प्रातः 9.50 बजे अपना स्थान ग्रहण कर लेंगे।
- हर सत्र में लगभग 10 से 15 मिनट ही थीमेटिक (विचार/सैद्धान्तिक) सत्र होगा। शेष समय हम सभी छोटे–बड़े समूहों में सामग्री निर्माण/प्रयोग का अभ्यास करेंगे।

## 5. संस्कृत भाषा किट : प्रयोग करते समय ध्यान देने योग्य बातें–

- प्रत्येक बच्चे को व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से प्रयोग करते हुए सीखने का अवसर दिया जाए।
- सामग्री पाठ्यवस्तु के अनुसार प्रयोग की जाए।
- शिक्षक स्तरानुसार एक ही सामग्री को विभिन्न कक्षाओं में प्रयोग कर सकते हैं।
- कक्षा में एक बार में एक ही सामग्री का उपयोग किया जाए।

## 6. प्रशिक्षण हेतु सामग्री–

- स्केच पेन
- स्केच पेन मिक्स्ड
- कैंची
- पटरी बड़ी
- मार्कर
- फेवीकोल
- मोम कलर
- चार्ट पेपर
- रंगीन डोरी

- दफ्ती
- बेलवेट चार्टपेपर
- बकरम
- स्केल (लकड़ी)
- फेब्रिक कलर

## 7. प्रार्थना

### वन्दे सदा स्वदेशम्

वन्दे सदा स्वदेशम् ।
एतादृशं स्वदेशम्।।
गंगा पुनाति भालम्।
रेवा कटिप्रदेशम्।।
वन्दे सदा स्वदेशम्।
एतादृशं स्वदेशम्।।
वन्दे ध्वजं त्रिवर्णम्।
वन्दे स्वतंत्रदेशम्।।
वन्दे सदा स्वदेशम्।
एतादृशं स्वदेशम्।।

### वन्दना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

## 7. संस्कृत भाषा–किट प्रशिक्षण सत्र की रूपरेखा

### प्रथम दिवस

| सत्र | सत्र विवरण |
|---|---|
| प्रथम सत्र | ❖ पंजीकरण पूर्व आकलन प्रपत्र एवं प्रशिक्षण सामग्री का वितरण<br>❖ शुभारम्भ कार्यक्रम का उद्घाटन<br>❖ प्रशिक्षण हेतु सामान्य नियम निर्धारण |
| | 11:30 AM – 11:40 AM (चाय अन्तराल) |
| द्वितीय सत्र | ❖ प्रशिक्षण का उद्देश्य एवं संस्कृत भाषा किट का सामान्य परिचय<br>❖ संस्कृत किट का सामान्य परिचय |
| | 01:30 PM – 01:50 PM (भोजनावकाश) |
| तृतीय सत्र | मौखिक भाषा विकास<br>❖ अभिवादनम्<br>❖ बालकथा<br>❖ बालगीतम्<br>❖ परिवेशीय चर्चा<br>❖ बालजगत् |
| | 03:20 PM – 03:30 PM (चाय अन्तराल) |
| चतुर्थ सत्र | संस्कृत भाषा में स्वर, व्यंजन एवं संख्या ज्ञान<br>❖ शब्दों से वर्ण की ओर<br>❖ आनन्दस्य पाठशाला |

# द्वितीय दिवस

| सत्र | सत्र विवरण |
|---|---|
| प्रथम सत्र | ❖ प्रार्थना<br>❖ प्रथम दिवस की पुनरावृत्ति/ प्रतिवेदन<br>संस्कृत शब्द भण्डार<br><br>❖ अंग परिचय:<br>❖ वेल्क्रो पट्टी<br>❖ वर्णानां नमामि<br>❖ मम् कुटुम्ब:<br>❖ मेरे अनेक नाम<br>❖ फ्लैश कार्ड<br>❖ संस्कृत शब्द निर्माण |
| 11:30 AM – 11:40 AM (चाय अन्तराल) | |
| द्वितीय सत्र | संस्कृत–शब्द–निर्माण:<br>❖ (शब्द पट्टिकाएँ)<br>❖ शब्दक्रीडा (तम्बोला) |
| 01:30 PM – 01:50 PM (भोजनावकाश) | |
| तृतीय सत्र | वाक्य निर्माण<br>❖ वाक्य निर्माण चक्रिका<br>❖ अहम् अस्मि<br>❖ स्टिक फ्लैश कार्ड<br>❖ धावन–प्रतियोगिता<br>❖ पुरुष वचन परिचय:<br>❖ प्रश्नवाचक शब्दा: |
| 03:20 PM – 03:30 PM (चाय अन्तराल) | |
| चतुर्थ सत्र | नैतिकता एवं मूल्यबोध<br>❖ सुभाषितानि एवं सूक्तय:<br>❖ प्रतिज्ञा+वीडियो |

# तृतीय दिवस

| सत्र | सत्र विवरण |
|---|---|
| प्रथम सत्र | ❖ प्रार्थना<br>❖ द्वितीय दिवस की पुनरावृत्ति/ प्रतिवेदन |
| | संस्कृत सम्भाषण<br>❖ वार्तालापः<br>❖ कक्षा–कक्ष के अनुमति निर्देश वाक्य<br>❖ दिनचर्या |
| 11:30 AM – 11:40 AM (चाय अन्तराल) | |
| द्वितीय सत्र | अभिनय क्षमता का विकास<br>❖ फिंगर–पपेट<br>❖ मुखौटा<br>❖ मनोभावरू |
| 01:30 PM – 01:50 PM (भोजनावकाश) | |
| तृतीय सत्र | मूल्यांकन<br>❖ डिब्बे में डिब्बा<br>❖ लूडोक्रीडा<br>❖ साँपसीढ़ी क्रीडा<br>❖ आओ मित्र! जोड़ें चित्र |
| 03:20 PM – 03:30 PM (चाय अन्तराल) | |
| चतुर्थ सत्र | पश्च आकलन<br>❖ प्रशिक्षण मॉड्यूल की सॉफ्ट कॉपी साझा<br>❖ समापन एवं प्रमाण–पत्र वितरण |

# संस्कृत भाषा–किट विकास समूह

**मुख्य संरक्षक** : श्री दीपक कुमार, अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन।

**संरक्षक** : श्री विजय किरन आनन्द, महानिदेशक (स्कूल शिक्षा), उ०प्र० तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

**निर्देशन** : डॉ० अंजना गोयल, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,उ०प्र०,लखनऊ।

**समन्वयन** : डॉ० ऋचा जोशी, निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

**समीक्षा** : प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, भूतपूर्व कुलपति/संयोजक, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रो० गोपबन्धु मिश्र, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, डॉ० कमला पाण्डेय, आचार्या, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी, प्रो० हरिप्रसाद अधिकारी, प्रो० तुलनात्मक दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रो० विवेक पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफेसर, हण्डिया पी०जी० कॉलेज, हण्डिया, प्रयागराज, प्रो० विनय कुमार पाण्डेय, बी०एच०यू०, वाराणसी, प्रो० उपेन्द्र त्रिपाठी , निदेशक, वैदिक विज्ञान केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रो० शरदिन्दु त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रो० ब्रजभूषण ओझा, व्याकरण विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, डॉ० चन्द्रकान्त दत्त शुक्ल, सं०ग०राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोहना, मऊ, डॉ० उमेश कुमार मिश्र, प्रभारी सहायक निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी, श्री सुदर्शन यादव, भूतपूर्व प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गोरखपुर, डॉ० अवनीश यादव, प्रधानाचार्य, पं०दी०द०उ०रा० मॉडल इण्टर कॉलेज, त्यार जागीर नवाबगंज, बरेली, डॉ० शीला सिंह, प्रधानाध्यापिका, राजकीय हाईस्कूल बढ़ैनीकला, वाराणसी, डॉ० अरविन्द कुमार तिवारी, प्रवक्ता संस्कृत, आदर्श वैदिक विद्यालय, इण्टर कॉलेज, बागपत।

**सम्पादन एवं लेखन** : श्रीमती नीलम यादव, शोध प्रवक्ता (संस्कृत), राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी। आचार्य कुशलदेव, प्रवक्ता, गुरुकुल महाविद्यालय, हापुड़, डॉ० अमर जीत, शोध प्रवक्ता (संस्कृत), राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी, डॉ० लीना केशवानी, प्रवक्ता (संस्कृत), राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, मलदहिया, वाराणसी, डॉ० सरोज कुमार पाण्डेय, स०अ०, प्रा०वि० गाड़ीवानपुर, काशीविद्यापीठ, वाराणसी, डॉ० रमाकांत पटेरिया, स०अ०, पू०मा०वि० गंज जैतपुर, महोबा, डॉ० भानु प्रकाश धर द्विवेदी, स०अ०, क०वि० बढ़ैनी कला, आराजीलाईन, वाराणसी, श्री शशि भूषण त्रिपाठी, स०अ०, उ०प्रा०वि० दनियालपुर, हरहुआ, वाराणसी,श्रीमती बेबी फातमा, स०अ०, प्रा०वि० उमरहा प्रथम, चिरईगाँव, वाराणसी, डॉ० अखिलेश कुमार पाण्डेय, स०अ०, प्रा०वि० होलापुर, हरहुआ, वाराणसी, श्री यज्ञ नारायण, शिक्षण प्रमुख, संवादशाला काशी, वाराणसी, श्रीमती रीता सिंह, स०अ०, प्रा०वि० शाहपुर, चिरईगाँव, वाराणसी, डॉ० सुधा, प्र०अ०, प्रा०वि० पुरन्दरपुर, सेवापुरी, वाराणसी, डॉ० माया त्रिपाठी, स०अ०, पू०मा०वि० महाराजगंज, औराई, भदोही, डॉ० जया त्रिपाठी, स०अ०, क०वि० चकसुन्दरपुर, भदोही, श्री मंगला प्रसाद, स०अ०, प्रा०वि० नगुआ, भदोही, श्रीमती क्षमा गौड़, स०अ०, प्रा०वि० मढ़िया, नियमताबाद, चन्दौली, श्रीमती प्रीती श्रीवास्तव, स०अ०, प्रा०वि० रन्नो बक्शा, जौनपुर, श्रीमती पूनम मिश्रा, स०अ०, क०वि० सरसहवां, हरहुआ, वाराणसी, संध्या शर्मा, स०अ०, प्रा०वि० चुमकुनी, चोलापुर श्रीमती ज्योति श्रीवास्तव, अनुदेशक, पू०मा०वि० गुरैनी, शाहगंज, जौनपुर।

**तकनीकी सहयोग एवं रूपायन** : श्री अजीत कुमार कौशल, कनिष्ठ सहायक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी, श्री मनोज कुमार यादव स०अ० प्रा०वि०चक्रचमरान बडागाँव वाराणसी, श्रीमती खुशबू।

**आभार** : संस्कृत भाषा-किट के विकास में अनेक पुस्तकों का अवलोकन व पाठ्यसामग्री का उपयोग किया गया है। हम सभी लेखकों तथा सम्पादकों के प्रति आभारी हैं।

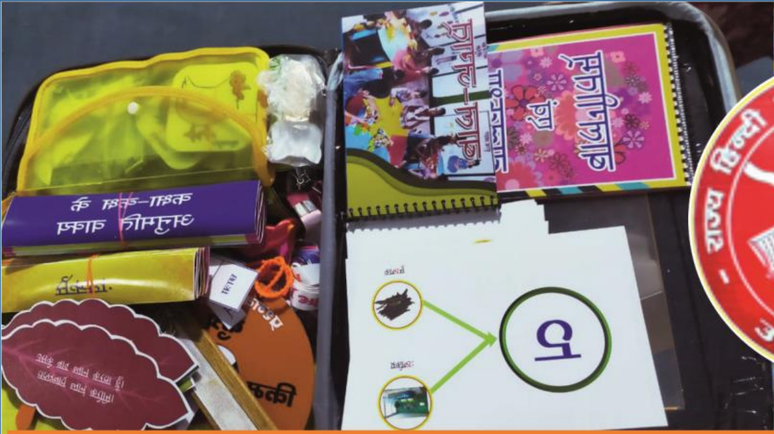

# (संस्कृत भाषा -किट)

## प्रशिक्षण- निर्देशिका

2023-24

# राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

## राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ